Regn. No. 1537/2021

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्र नाम ततुल्यं राम नाम वरानने ॥

प्रभु सेवा परिवार

(इंडिया ट्रस्ट एक्ट, 1882 के तहत निगमित एक धार्मिक ट्रस्ट
पंजिकरण संख्या 1537/2021)

स्मारिका

2024

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

प्लॉट नंबर 30 वरूण एन्क्लेव, ग्रेटर नोएडा
+91- 9839639952, +91- 8808836666
prabhusewaparivar@gmail.com

Regn. No. 1537/2021

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ऊँ गजाननं भूतागणादि सेवितम्, कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्, नमामि विध्नेश्वर पाद पंकजम् ॥

श्री चित्रगुप्त भगवान जी स्तुति

जय चित्रगुप्त यमेश तव, शरणागतम शरणागतम ।
जय पूज्य पद पद्मेश तव, शरणागतम शरणागतम ॥
जय देव देव दयानिधे, जय दीनबन्धु कृपानिधे ।
कर्मेश जय धर्मेश तव, शरणागतम शरणागतम ॥
जय चित्र अवतारी प्रभो, जय लेखनी धारी विभो ।
जय श्याम तन चित्रेश तव, शरणागतम शरणागतम ॥
पूर्वज भगवत अंश जय, कायस्थ कुल अवतंश जय ।
जय शक्ति बुद्धि विशेष तव, शरणागतम शरणागतम ॥
जय विज्ञ शाश्वत धर्म के, ज्ञाता शुभाशुभ कर्म के ।
जय शांति न्यायाधीश तव, शरणागतम शरणागतम ॥
जय दीन अनुरागी हरि, चाहे दया दृष्टि तेरी ।
कीजै कृपा करूणेश तव, शरणागतम शरणागतम ॥
तव नाथ नाम प्रताप से, नर जाय छुट भय ताप से ।
हों दूर सर्व क्लेश तव, शरणागतम शरणागतम ॥

Regn. No. 1537/2021

स्मारिका : 2024

संस्थापक:
पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी

अध्यक्ष:
श्री सतीश श्रीवास्तव

सम्पादक:
श्रीमती सोनल खरे

प्रकाशक
प्रभु सेवा परिवार (पंजी.)
प्लाट संख्या-30, वरूण इंक्लेव
ग्रेटर नोयडा-201310
फोन- +91- 9839639952,
+91- 8808836666
ई-मेल: prabhusewaparivar@gmail.com

स्मारिका: 2024 में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण, सम्बन्धित लेखकों / सामग्री प्रदाताओं के हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक या मुद्रक का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है। यह पत्रिका केवल निजी वितरण के लिए है।

अनुक्रमणिका

1. प्रभु सेवा परिवार का गीत 1
2. संपादकीय 2
3. प्रभु सेवा परिवार– एक परिचय 3
4. पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ला–एक परिचय........ 4
5. संस्थापक का संदेश 5
6. अध्यक्ष का संदेश 6
7. गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें 7–8
8. गत वर्ष की अन्य कथा 9–10–11
9. विष्णु शंकर दूबे एवं अन्य फोटो........ 12
10. गुरू अष्टकम 13
11. विवेक से बैराग्य की ओर 14
12. अयोध्या जी का महात्म्य 15
13. भगवान की प्रसन्नता 16
14. गुरू महिमा 17
15. सा विद्या या विमुक्तये 18–19
16. निर्मल भक्ति का दान 20–21
17. व्यक्तिगत संस्मरण 22
18. रामहि केवल प्रेम पियारा 23
19. सहसा विद्धीत न क्रियात 24
20. हमारे सदस्यगण 25–26–27
21. सम्मानित सदस्य गण 28
22. बैलेंस सीट 29
23. दानदाताओं के नाम 30
24. स्मारिका में सहयोगियों के नाम........ 31

12 A : AAETP8071E22LK01
80 G : AAETP8071EE2021801

प्रभु सेवा परिवार का गीत

(1)

हमारा प्रभु सेवा परिवार।
प्रभु के भक्तों का परिवार।।

राम कथा भागवत कराता,
सबको तीरथ धाम घुमाता।
कथा सुनें सब तीरथ करके,
हो जावें भवपार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

निर्धन दीन जनों की सेवा,
गो सेवा और प्रभु की सेवा।
सेवा जिसका मूल मंत्र है,
करता पर उपकार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

एक बनें हम, नेक बनें हम,
मानवता के काम करें हम।
यही हमारा सत्प्रयास है,
श्रेष्ठ बने संसार।
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

(2)

हमारा प्रभु सेवा परिवार ।
प्रभु के भक्तो का परिवार ।।

ये जग प्रभु का रूप है प्यारा,
जग सेवा ही मंत्र हमारा ।
दीन जनों की सेवा निसदिन दीन जनो से प्यार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

सेवा सबसे बड़ा धर्म है,
सेवा ही तप है, सुकर्म है।
सेवा सबसे बड़ी है पूजा सृष्टि का आधार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार।।

आओ हम सब हाथ बढायें,
सेवा यज्ञ को सफल बनायें ।
जग सेवा प्रभु सुमिरन करके हो जाये भव पार,
हमारा प्रभु सेवा परिवार ।।

Regn. No. 1537/2021

सम्पादकीय

श्रीमति सोनल खरे
सम्पादक

प्रभु सेवा परिवार की तृतीय स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्मारिका 2024 प्रकाशित किया जा रहा है। प्रभु सेवा परिवार द्वारा स्मारिका का प्रकाशन किया जाना निसन्देह प्रशंसनीय है। प्रभु सेवा परिवार ने विगत तीन वर्षो मे बहुत ही सराहनीय कार्य किया है–

1. द्वारिका पुरी में 24 दिसम्बर 2021 से 01 जनवरी 2022 नये साल के शुभ अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन, इस कथा का लाईव प्रसारण ईश्वर चैनल पर किया गया। नागेश्वर नाथ एवं सोमनाथ ज्योर्तिलिंग का दर्शन ।
2. 19 मई 2022 से 30 मई 2022 तक उत्तराखण्ड की चारधाम यात्रा का सफल आयोजन किया गया।
3. 18 जुलाई 2022 से 25 जुलाई 2022 तक कोलकाता में आयोजित शिव महापुराण की कथा का विशेष प्रसारण सुभारती चैनल पर किया गया।
4. 24 दिसम्बर 2022 से 04 जनवरी 2023 तक रामेश्वर धाम में नये साल के शुभ अवसर पर श्री राम कथा का सफल आयोजन एवं जिसका विशेष प्रसारण सुभारती चैनल पर किया गया। दक्षिण भारत की यात्रा मे श्री शैलम मल्लिकार्जुन ज्योर्तिलिंग तिरूपति बालाजी, महालक्ष्मी जी का स्वर्ण मन्दिर बैल्लूर, काचीपुरम, मदुरई मिनाक्षी मन्दिर, कन्याकुमारी मन्दिर, विवेकानन्द शिला स्मारक और पद्मनाभ स्वामी मन्दिर त्रिवेन्द्रम का दर्शन ।
5. गुरूपूर्णिमा 2023 के शुभ अवसर पर अयोध्या धाम में 02 जुलाई 2023 से 10 जुलाई 2023 तक श्रीराम कथा का भव्य आयोजन एवं गुरूपूर्णिमा का सफल आयोजन किया गया। अयोध्या धाम में सन्तो की सेवा, गरीबो की सहायता एवं भण्डारा किया गया।
6. पुरूषोत्तम मास में बैकुण्ठ धाम बद्रीनाथ में 09 अगस्त 2023 से 15 अगस्त 2023 श्रीमद् भागवत कथा का सफल आयोजन और जिसका विशेष प्रसारण दिशा भक्ति चैनल पर किया गया।
7. 26 दिसम्बर 2023 से 01 जनवरी 2024 तक जगन्नाथपुरी धाम में नये साल के शुभ अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा का सफल आयोजन एवं भगवान जगन्नाथपुरी के दर्शन, कोर्णाक मन्दिर, महा लिंगराज मन्दिर भूवनेश्वर, साक्षी गोपाल मन्दिर और समुन्द्र के दर्शन ।
8. 09 जुलाई 2024 से 12 जुलाई 2024 तक श्रीनगर कश्मीर मे गुरूजी के साथ अमरनाथ यात्रा बाबा बर्फानी के दर्शन, खीर भवानी माता के दर्शन, डल झील एवं मुगल गार्डन एवं श्रीनगर का प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शन ।
9. 20 जुलाई 2024 से 28 जुलाई 2024 गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर बृज चौरासी की यात्रा । 20 जुलाई को वृन्दावन में गुरू पूर्णिमा महोत्सव धूम–धाम से मनाया गया । 21 जुलाई से 28 जुलाई तक ए.सी वाहन द्वारा चौरासी कौस की दर्शन यात्रा वृंदावन धाम, वरसाना धाम, नन्द गाँव, गोकुल, मान सरोवर, रमन रेती, गोवर्धन की परिक्रमा, कोसी गोमती सरोवर, ब्रज के चारो धाम, चीरघाट, मानसी गंगा, कालिया मर्दन आदि के दर्शन पूजन गुरूजी के साथ किया ।
10. 13 सितम्बर 2024 से 17 सितम्बर 2024 तक उत्तराखण्ड में गुरूजी के साथ यमनोत्री मैया का दर्शन पूजन, तप्तकुण्ड में स्नान , ऋषीकेश में नीलकंठ महादेव के दर्शन, हरिद्वार में मंशा देवी एवं चंढी देवी, गंगा स्नान एवं गंगा आरती

आगामी प्रयाग महाकुम्भ के शुभ अवसर बसंत पंचमी से माघ पूर्णिमा तक कुम्भ क्षेत्र में राम कथा का आयोजन निश्चित किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रभु सेवा परिवार निरन्तर आगे बढ़ रहा है।

अन्त में प्रभु सेवा परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनायें देती हूँ और संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए परमात्मा से कामना करती हूँ।

प्रभु सेवा परिवार - एक परिचय

प्रभु सेवा परिवार

संस्थापक
श्री रमेश भाई शुक्ल
मो० 9839639952

राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री सतीश श्रीवास्तव
मो० 8808836666

राष्ट्रीय महासचिव/कोषाध्यक्ष
श्री अभिषेक श्रीवास्तव
मो० 9582435770

स्थापना : 15 सितम्बर वर्ष 2021

पंजीकरण संख्या : 1537 / 2021

ट्रस्ट पंजीकरण एक्ट : इण्डिया ट्रस्ट एकट 1882 के तहत पंजीकृत

आयकर अधिनियम : आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12 A और 80 G के तहत पंजीकृत

उद्देश्य :

(1) जनमानस का कल्याण : प्रभु सेवा परिवार का मुख्य उद्देश्य जनमानस का कल्याण करना है और इस उद्देश्य की पूति हेतु तीर्थ यात्राओं, सत्संग धार्मिक कथाओं, भागवत् कथा आदि का आयोजन ट्रस्ट द्वारा समय–समय पर कराया जाना।

(2) सनातन धर्म व संस्कृति का प्रसार : सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार हेतु धार्मिक स्थलों (मन्दिरों) एवं धार्मिक संस्थानो को दान देना ।

(3) गौ सेवा करना : गौमाता की सेवा हेतु धनराशि उपलब्ध कराना जिसके द्वारा गौ शालाओं का रख–रखाव भली भांति किया जा सके एवं गौमाता का संरक्षण एवं सेवा हो सके।

(4) निर्धनों का सहयोग : निर्धनों की दैनिक आवश्यकताओं (भोजन, वस्त्र आदि) की पूर्ति हेतु वित्तीय सहयोग प्रदान करना।

(5) वंचित वर्ग का सहयोग : वंचित वर्ग के सहयोग हेतु वृद्धाश्रम, अनाथालय एवं औषधालयों की स्थापना एवं संचालन में सहयोग करना।

(6) अन्य धार्मिक संस्थानों का सहयोग : अन्य धार्मिक संस्थान यदि समाज हित में संलग्न होकर कोई आयोजन करता है तो उस धार्मिक आयोजन से सहभागी बनकर सहयोग प्रदान करना ।

(7) निर्धन विद्यार्थियों के लिए सहयोग : वह कुशल निर्धन विद्यार्थी जो पुस्तक नोट बुक आदि की व्यवस्था करने में अक्षम हैं उनकी शिक्षा की व्यवस्था हेतु सहयोग करना।

(8) शिक्षा, स्वच्छता के प्रति जागरूकता : अशिक्षित नागरिकों में शिक्षा के महत्व को समझाना एवं स्वच्छता का महत्व बताना साथ ही गन्दगी से होने वाली बीमारियों एवं उससे बचाव पर चर्चा करना ।

प्रभु सेवा परिवार की प्रेरणा का मुख्य स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी का यह विश्व व्यापी विचार है ।
अज्ञानी लोग जिसे मनुष्य कहते है, मैं उस नारायण का सेवक हूँ। अर्थात् 'नर सेवा – नारायण सेवा'

इस ट्रस्ट का एकमेव उद्देश्य प्रत्येक उस व्यक्ति का हर सम्भव स्तर पर सहयोग करना है जो मानवीय मूल्यों के आधार पर सहयोग आकांक्षी है। प्रभु सेवा परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना से कार्य करते हुए निः स्वार्थ भाव से वंचित वर्ग की सेवा हेतु तन मन धन से तत्पर है। इसके साथ–साथ यह प्रभु सेवा परिवार प्रत्येक व्यक्ति में उच्च मानवीय मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का विकास करते हुए देश हित में सभ्य नागरिको के निर्माण में सहयोग कर रहा है। अर्थात् प्रभु सेवा परिवार जन कल्याण एवं सामाजिक कल्याण के लिए पूर्णतः समर्पित है।

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल- एक परिचय

परम पूज्य सन्त श्री रमेश भाई शुक्ल जी का जन्म ज्येष्ठ मास की कृष्ण चतुर्थी 1973 में शारदा नदी के तट पर स्थित पचपेड़ी ग्राम जिला लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश में हुआ है। गुरूजी के माताजी श्रीमती सुधालता सात्विक गृहणी हैं और पिताजी स्व० श्री ऋषि नाथ प्रसाद शुक्ल जो कि अध्यापक रहे और साठ साल की उम्र तक अध्यापक का कार्य किया। वे बहुत ही भगवत प्रेमी व्यक्तित्व के धनी थे।

गुरूजी की बचपन से रूचि हिन्दू शास्त्र के बारे में जानने और शोध करने की थी, उन्होंने हमेशा अपना समय उसी लिए समर्पित किया। वर्ष 1996 में स्नातकोत्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद शिशु मन्दिर में आचार्य के पद पर कार्य कियें। उसी वर्ष गुरूजी का विवाह श्रीमती ज्योत्सना देवी के साथ हुआ जो कि एक आदर्श धर्मपत्नी एवं कुशल गृहणी के रूप में साथ निभा रही है। गुरूजी के दो सन्तान–एक पुत्री एवं एक पुत्र हैं जो अभी शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

लगभग तीन साल शिक्षण कार्य करने के बाद वर्ष 2000 में अन्ततः उन्हें भगवान की कृपा प्राप्त हुई और गुरूजी ने प्रभु की सेवा रामचरित मानस, भागवत कथा, शिव कथा एवं हनुमान कथा का आध्यात्मिक अध्ययन करके, कथा के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसार करने के उद्देश्य से आगे बढ़े तब से निरन्तर प्रभु की सेवा में लगे हैं। उनकी भगवान की कथाओं के माध्यम से समाज में हिन्दू संस्कृति के मूल्यों का प्रसार करना समाज में फैली कुरीतियों को खतम करने का प्रयास कर रहे हैं।

गुरूजी ने शास्त्रों का अध्ययन किया, इसके अलावा उन्होंने सभी हिन्दू शास्त्रों के साथ अन्य धर्मों के बारे में भी अध्ययन किया। यूट्यूब, फेसबुक और टी॰वी॰ चैनलों और अन्य सोशल मीडिया के माध्यमों से वह लोगों के सामने श्रीराम कथा, श्रीमद्भागवत कथा, हनुमान कथा एवं शिव कथा का बहुत ही सरल शब्दावली में आध्यात्मिक एवं तार्किक व्याख्या करके लोगों में भगवत भक्ति का प्रचार करते हैं और काफी लोग उनका अनुसरण कर रहे हैं।

गुरूजी के कार्यों की बात करें तो वह एक अच्छे कथा वाचक हैं और अपनी कथा के माध्यम से लोगों को अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं ताकि देश एवं समाज का अच्छा विकास हो, लोगों के सोच में भगवान की भक्ति हो। अपनी कथा में वह हमेशा लोगों को भक्ति के मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं ताकि उन्हें एक अच्छा जीवन जीने का अवसर मिल सके।

गुरूजी ने लोगों के अन्दर प्रभु की भक्ति का संचार होता रहे, इसी के लिए प्रभु सेवा परिवार ट्रस्ट का गठन 15/09/2021 को किया। गुरूजी प्रभुसेवा परिवार के संस्थापक हैं और इस ट्रस्ट के माध्यम से भारत में या भारत के बाहर पवित्र स्थानों में विभिन्न कथाओं का संचालन कर रहे है। गुरूजी गरीब असहाय एवं जरूरतमंदों का सहारा भी बन रहे हैं और ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने जरूरतमंदों की सहायता के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है।

गुरूजी का निवास स्थान और सम्पर्क सूत्र इस प्रकार है:–

प्रभु सेवा धाम, 7/633 A, विकास नगर, लखनऊ। मोबाइल: 9839639952

संस्थापक का संदेश

पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक
प्रभु सेवा परिवार

शास्त्रों में एक शब्द आया है – आत्महत्या

आत्म हत्या की वास्तविक परिभाषा क्या है। आइये समझें

(1) जो कामना और ममता के कारण जगत को तो देखते है पर जगत की आत्मा जगदीश को नहीं देखते वे आत्म हत्या कर रहे है, जो जगत दर्शन तो करते है– पर आत्म दर्शन नही करते वे आत्म हत्या कर रहे हैं ।

(2) जो धन का संग्रह तो करता है पर समाज राष्ट्र और धर्म के लिये इसका त्याग नही करता वो आत्म हत्या कर रहा है धन का संग्रह पाप नही है– पर राष्ट्र और धर्म के लिये उसका त्याग न करना पाप हे– ये आत्म हत्या है।

(3) जिस का जो स्वरूप है और जिसका जो उपयोग है– उसको उसके स्वरूप व उपयोग से वंचित कर देना भी एक प्रकार की आत्महत्या है।

हमारा ब्रम्ह स्वरूप है। तथा समाज सेवा और भगवत प्राप्ति इसका उपयोग है। सोने को पीतल के भाव बेव देना– ये सोने की आत्म हत्या है।

(4) जिसकी इन्द्रियां और प्राण केवल भोगों के लिये तड़पते है– वो आत्महत्या कर रहा है

जिसके प्राण और इन्द्रियां केवल संसार की वासनाओं का चिंतन कर रहे है– वो आत्महत्या कर रहा है।

(5) ये दुर्लभ मानव शरीर पाकर जो भगवान का भजन नही कर रहा है वो आत्महत्या कर रहा है।

(1)

हम हैं प्रभु सेवक हम सबका प्रभु सेवा परिवार है।
प्रभु सेवा और जग सेवा ही हम सब का आधार है।।
ये संसार प्रभु की बगिया इसका माली बनना है।
हरी भरी खुशहाल रहे ये सत्प्रयास यह करना है।।
दीन दुखी निर्बलों की सेवा जग में धर्माचार है।
हम हैं प्रभु सेवक हम सबका प्रभु सेवा परिवार है।।
आओ मिलकर हाथ बढ़ाओ सेवा धर्म जगाना है।
प्रभु सेवा परिवार को हमको आगे और बढ़ाना है।।
प्रभु सेवा परिवार ही अपना प्रभु सेवा परिवार है।
हम हैं प्रभु सेवक हम सबका प्रभु सेवा परिवार है।।
हम हैं प्रभु सेवक हम सबका प्रभु सेवा परिवार है।
प्रभु सेवा और जग सेवा ही हम सब का आधार है।।

(2)

प्रभु सेवा और हरि सुमिरन बस दो ही जग में सार है।
बाकी जो कुछ देख रहे हो–सब नश्वर संसार है।।
क्या लेकर तुम आये जग में क्या लेकर तुम जाओगे।
मुट्ठी बाँधे आये थे और हाथ पसारे जाओगे।।
धन दौलत और माल खजाना सपने का व्यापार है।
प्रभु सेवा और हरि सुमिरन बस दो ही जग में सार है।।
दो दिन की ये दुनियादारी दो दिन की जिंदगानी है।
क्यों भूला है मूरख बंदे माया आनी जानी है।।
दो दिन का ये जग मेला है दो दिन का व्यवहार है।
प्रभु सेवा और हरि सुमिरन बस दो ही जग में सार है।।
उठो करो संकल्प आज से समय न व्यर्थ गँवाना है।
मरने से पहले ही हमको परमपिता को पाना है।।
प्रभु सेवा परिवार की सबसे ये करबद्ध गुहार है।
प्रभु सेवा और हरि सुमिरन बस दो ही जग में सार है।।

अध्यक्ष का संदेश

Regn. No. 1537/2021

श्री सतीश श्रीवास्तव
अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

दिया ज्ञान का भंडार मुझे, किया भविष्य के लिए तैयार मुझे ।
जो किया आपने उस उपकार के लिए, नहीं शब्द मेरे पास आभार के लिए ।।

प्रभु सेवा परिवार के तृतीय स्थापना दिवस पर मै पूरे परिवार की तरफ से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाये देता हूँ। जैसा आप सबको विदित है कि पिछले वर्ष की भांति पुनः अध्यात्म से आधारित स्मारिका छपवाई जा रही है जिसका श्रेय गुरूजी को जाता है। इस संस्था के संस्थापक गुरू जी के बारे में कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा होगा।

गुरू जी लगन निष्ठा एवं कड़ी मेहनत से भगवान का गुणगान चारो दिशाओ मे फैला रहे है जिससे जन मानस का कल्याण हो रहा है। जिस उद्देश्य के लिए इस संस्था की स्थापना की है उसमे सफलता मिल रही है और आप लोगो के सहयोग से प्रभु सेवा परिवार निरन्तर आगे बढ़ता रहेगा।

अन्त में मै आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि आप सभी परिवार का सदस्य बने और अधिक से अधिक लोगो को सदस्य बनाने का प्रयास करें। आपकी औरचारिक सदस्यता और सहयोग प्रभु सेवा परिवार को सुदृढ़ बनाने में अहम भूमिका निभायेगी।

आजीवन सदस्यता प्राप्त करने का विवरण नीचे दिया गया है।

एक बार पुनः गुरू जी के चरणो की वन्दना करते हुये आप सभी भाईयो और बहनो को अभिनन्दन एवं बहुत बहुत शुभकामनाये ।

धन्यवाद

आजीवन सदस्यता प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि मात्र 2100/– रूपए है। आप यह सहयोग राशि नीचे दिए हमारे बैंक एकाउंट में NEFT/UPI/Net Banking आदि के द्वारा जमा कर सकते हैं। एकाउँट का QR Code भी नीचे दिया गया है। सहयोग राशि जमा करने के बाद जमा रसीद, पासपोर्ट साइज फोटो और एक प्रमाणिक पहचान पत्र की कॉपी व्हाट्सएप या ई–मेल के द्वारा हमें भेज दें।

हमारे प्रकल्प

* तीर्थो में कथाऐं एवं भण्डारा
* संत सेवा
* गरीब विद्यार्थियों को सहयोग
* गरीब कन्याओं की शादी में सहयोग

QR Code
Prabhu Sewa Parivar

PRABHU SEWA PARIVAR
Bank: CANARA BANK
Branch: 4801 - Omega, Greater Noida, G.B. Nagar (UP)
Account No.: 110014441034 IFSC: CNRB0004801

सभी प्रभु भक्तों से अनुरोध है कि इन प्रकल्पों में तन मन धन से सहयोग कर पुन्य के भागी बने

जो भी व्यक्ति प्रभु सेवा परिवार में दान देना चाहते हैं तो दान राशि कर मुक्त है (80G की छूट)

गत वर्ष आयोजित धार्मिक यात्रायें एवं कथायें

1. जगन्नाथपुरी की यात्रा एवं श्रीमद् भागवत कथा

26 दिसम्बर 2023 से 01 जनवरी 2024 तक जगन्नाथपुरी धाम में नये साल के शुभ अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा का सफल आयोजन एवं भगवान जगन्नाथपुरी के दर्शन, कोर्णाक मन्दिर, महा लिंगराज मन्दिर भूवनेश्वर, साक्षी गोपाल मन्दिर और समुन्द्र के दर्शन ।

2. अमरनाथ की यात्रा

09 जुलाई 2024 से 12 जुलाई 2024 तक श्रीनगर कश्मीर मे गुरूजी के साथ अमरनाथ यात्रा बाबा बर्फानी के दर्शन, खीर भवानी माता के दर्शन, डल झील एवं मुगल गार्डन एवं श्रीनगर का प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शन ।

3. गुरुपूर्णिमा के शुभअवसर पर बृज चौरासी कोस की यात्रा

20 जुलाई 2024 से 28 जुलाई 2024 गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर बृज चौरासी की यात्रा । 20 जुलाई को वृन्दावन में गुरू पूर्णिमा महोत्सव धूम–धाम से मनाया गया । 21 जुलाई से 28 जुलाई तक ए.सी वाहन द्वारा चौरासी कौस की दर्शन यात्रा वृंदावन धाम, वरसाना धाम, नन्द गाँव, गोकुल, मान सरोवर, रमन रेती, गोवर्धन की परिक्रमा, कोसी गोमती सरोवर, ब्रज के चारो धाम, चीरघाट, मानसी गंगा, कालिया मर्दन आदि के दर्शन पूजन गुरूजी के साथ किया ।

4. यमनोत्री धाम

13 सितम्बर 2024 से 17 सितम्बर 2024 तक उत्तराखण्ड में गुरूजी के साथ यमनोत्री मैया का दर्शन पूजन तप्तकुण्ड में स्नान , ऋषीकेश में नीलकंठ महादेव के दर्शन, हरिद्वार में मंशा देवी एवं चंढी देवी गंगा स्नान एवं गंगा आरती

4. गत वर्ष में आयोजित अन्य कथाओं का विवरण

क्र०सं०	दिनांक	स्थान
1	17 सितम्बर 2023 से 27 सितम्बर 2023	सुल्तान पुर, उत्तर प्रदेश
2	03 अक्टूबर 2023 से 13 अक्टूबर 2023	कन्नौज, उत्तर प्रदेश
3	15 अक्टूबर 2023 से 23 अक्टूबर 2023	पचौरा ग्वालियर, मध्य प्रदेश
4	15 नवम्बर 2023 से 23 नवम्बर 2023	उदयपुर, राजस्थान
5	25 नवम्बर 2023 से 03 दिसम्बर 2023	खदरा लखनऊ, उत्तर प्रदेश
6	15 दिसम्बर 2023 से 22 दिसम्बर 2023	पतारा, सीतापुर, उत्तर प्रदेश
7	26 दिसंबर 2023 से 01 जनवरी 2024	जगन्नाथपुरी धाम, उड़ीशा
8	02 जनवरी 2024 से 08 जनवरी 2024	मलकान गिरी, उड़ीशा
9	11 जनवरी 2024 से 18 जनवरी 2024	रायबरेली, उत्तर प्रदेश
10	19 जनवरी 2024 से 27 जनवरी 2024	इन्द्रपुरी, दिल्ली
11	02 फरवरी 2024 से 08 फरवरी 2024	हसौद, छत्तीसगढ़
12	11 फरवरी 2024 से 18 फरवरी 2024	निरमली गंज, विहार
13	21 फरवरी 2024 से 28 फरवरी 2024	कौवाडील, गोरखपुर उत्तर प्रदेश
14	29 फरवरी 2024 से 08 मार्च 2024	अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश
15	9 मार्च 2024 से 14 मार्च 2024	लखनऊ, उत्तर प्रदेश
16	15 मार्च 2024 से 23 मार्च 2024	अमेठी, उत्तर प्रदेश
17	27 मार्च 2024 से 04 अप्रैल 2024	चौरी भदोही, उत्तर प्रदेश
18	05 अप्रैल 2024 से 07 अप्रैल 2024	प्रयाग, उत्तर प्रदेश
19	09 अप्रैल 2024 से 17 अप्रैल 2024	बडौदरा, गुजरात
20	21 अप्रैल 2024 से 28 अप्रैल 2024	वसुंधरा, गाजियाबाद
21	30 अप्रैल 2024 से 08 मई 2024	सै0—20, चण्डीगढ़
22	12 मई 2024 से 23 मई 2024	कौशी, छत्तीसगढ़
23	24 मई 2024 से 01 जून 2024	अल्साहन उना, हिमाचल प्रदेश
24	12 जून 2024 से 16 जून 2024	शिमला, हिमाचल प्रदेश
25	21 जून 2024 से 29 जून 2024	मेरठ, उत्तर प्रदेश
26	09 जुलाई 2024 से 12 जुलाई 2024	अमरनाथ यात्रा, जम्मू कश्मीर
27	20 जुलाई 2024 से 28 जुलाई 2024	बृज चौरासी की यात्रा
28	03 अगस्त 2024 से 11 अगस्त 2024	लिलुआ, बेस्ट बंगाल
29	12 अगस्त 2024 से 18 अगस्त 2024	ए.सी मार्केट, हावड़ा, बेस्ट बंगाल
31	23 अगस्त 2024 से 30 अगस्त 2024	लखनऊ, उत्तर प्रदेश
32	01 सितम्बर 2024 से 11 सितम्बर 2024	पटना, विहार
33	13 सितम्बर 2024 से 17 सितम्बर 2024	यमुनोत्री, उतराखण्ड

गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर
सभी गुरू भाईयों का
प्रभु सेवा परिवार
की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं
गुरुपूर्णिमा
21 जुलाई 2024
सतीश श्रीवास्तव अध्यक्ष - प्रभु सेवा परिवार

श्रीमद् भागवत कथा, गोरखपुर
श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान
प्रभु सेवा TV
Sant Ramesh Bhai Shukla
कथा में महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश श्री शिव प्रताप शुक्ल जी का आगमन

गोस्वामी तुलसी जयंती के अवसर पर
गोस्वामी तुलसी दास जी के प्रिय पात्र
भरत जी का पावन चरित्र
दिनांक
12 अगस्त से
15 अगस्त
2024 तक
:: कथा समय ::
दोपहर 2 बजे से सायं 6 बजे तक
मानस में भरत चरित्र
भरत कथा भव बंध विमोचनि
आप सब सपरिवार पधारे कथा अमृत का पान करें
कथा स्थल : 14 Watkins Lane
Gokul Community Hall
Near Howrah AC Market, Howrah
:: आयोजक ::
प्रभु सेवा परिवार हावड़ा पश्चिम बंगाल
कथा व्यास
संत श्री रमेश भाई शुक्ल

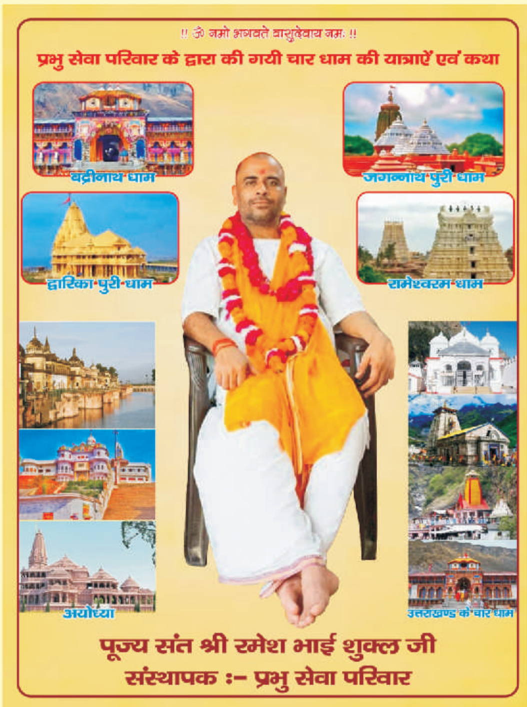
!! ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः !!
प्रभु सेवा परिवार के द्वारा की गयी चार धाम की यात्राऐं एवं कथा
बद्रीनाथ धाम
जगन्नाथ पुरी धाम
द्वारिका पुरी धाम
रामेश्वरम धाम
अयोध्या
उत्तराखण्ड के चार धाम
पूज्य संत श्री रमेश भाई शुक्ल जी
संस्थापक :- प्रभु सेवा परिवार

श्री सोमेश्वर महादेव ग्रुप मित्र मंड

श्रीमति नगीनावेन दूबे एवं श्री विष्णु शंकर दूबे

बड़ौदा गुजरात मो0 : 9601012218

भगवान श्रीराम की असीम करूणा से बड़ोदा में पिछले चैत्र मास नवरात्रि में दिनांक 09 अप्रैल से 17 अप्रैल 2024 तक एक दिव्य श्री राम कथा का आयोजन गुरूजी द्वारा सम्पन्न हुआ । ऐसा लगा मानो सतसंग ही स्वर्ग है।

अतः आईये अगले सतसंग के लिए गुजरात सोमनाथ ज्योतिलिंग में नये साल के शुभ अवसर पर 27 दिसम्बर 2025 से 03 जनवरी 2026 के लिए तैयार हो जाइये। भगवान भोलेनाथ का प्रथम ज्योतिलिंग में स्वर्ग का अहसास राम कथा के सतसंग से करें ।

!! सतसंग स्वयं स्वर्ग है !!

गुरू अष्टकम

सुश्री शिप्रा दीक्षित
लखनऊ

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित

(1) शरीरं सुरूपं तथा वा कतत्रं यशश्चारू चित्रं धनं मेरूतुल्यम्।
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रिपद्में ततः किं तः किं ततः किं ततः किं ।। 1 ।।

आपका शरीर भले ही सुन्दर हो आपकी पत्नी भी सुन्दर हो, आपका यश चारों दिशाओं में हो, मेरू पर्वत के समान विशाल धन हो परन्तु आपका मन गुरू के चरण कमलों में न लगता हो तो इन सबका क्या अर्थ है अर्थात् इन सभी उपलब्धियों का क्या लाभ?

(2) कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादि सर्व गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।
मनश्चैन लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 2 ।।

आपके पास पत्नी, धन, पुत्र, पौत्र आदि सब घर, भाई सभी सगे संबंधी हो पर आपका मन गुरू के चरणारविन्दों में न लगता हो तो इन सबका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है, क्या अर्थ है ।

(3) वडंगादि वेदो मुखे शास्त्र विधा कवित्वादि गद्यम्, सुपद्यम् करोति
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रिपद्मे ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 3 ।।

आपके मुख में सभी वेद एवं वेदांग हो अर्थात कंठस्थ हो आप सुन्दर कविता, गद्य, पद्य की रचना करते हो परन्तु आपका मन गुरू के चरणारविन्दो में न लगता हो, तो इन सबका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है, क्या अर्थ है ।।

(4) विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः, सदाचार वृत्तेषु मत्तो न चान्यः ।
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रि पद्मे, ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 4 ।।

यदि विदेश में आपकी बहुत मान्यता (सम्मान) है, अपने देश में भी आप धन्य है अर्थात् सम्मानित है और सदाचार वृत्ति में आपके समान अन्य कोई नहीं है परन्तु आपका मन गुरू चरणारविन्दों में नहीं लगता है तो इन सबका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है, क्या अर्थ है ?

(5) क्षमामण्डले भूपं भूपाल वृन्दः सदा सेवितं यस्य पादारविंदम् ।
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रि पद्मे, ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 5 ।।

समस्त भूमण्डल के राजा, महाराजा सम्राट भी जिसके चरण कमलों की सदा सेवा करते हो परन्तु उसका भी मन यदि गुरू-चरणारविन्दों में नहीं लगता है, तो इन सबका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है, क्या अर्थ है?

(6) यशो मे गतं दिक्षु दान प्रतापा जगद्वस्तु सर्व करे यत्प्रसादात ।
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रि पद्मे, ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 6 ।।

मेरे दान प्रताप का यश सभी दिशाओं में फैला हो जिसके प्रसाद अर्थात् पुरस्कार स्वरूप सम्पूर्ण जगत की सभी वस्तुएं मेरे हाथ में हो परन्तु मेरा मन गुरू चरण कमलों में न लगता हो, तो इन सबका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है, क्या अर्थ है ?

(7) न भोगे न योग न वा वाजीराजौ, न कांता मुखे नैव वित्तेशु चित्तं ।
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रि पद्मे, ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 7 ।।

यदि चित्त न भोग में, न योग में, न अश्व न राज्य में न स्त्री के सुन्दर मुख में न ही धन में लगा हो परन्तु यदि मन गुरू चरणारविन्दों मे नहीं है तो इसका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है, क्या अर्थ है ?

(8) अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये, न देहे मनो वर्तते मे त्वन्हर्ये ।
मनश्चैन लग्नम् गुरोरंघ्रि पद्मे, ततः किं ततः किं ततः किं ततः किं ।। 8 ।।

यदि मन न वन में, न अपने घर में न कार्य में न शरीर में रहता हो अर्थात् सब प्रकार का आकर्षण समाप्त हो गया हो परन्तु मन गुरू चरण कमलों में न लगता हो तो इन सबका क्या अर्थ है, क्या अर्थ है,

।। गुरूकृपा ही केवलं ।।

विवेक से वैराग्य की ओर

श्री अरूण कुमार शुक्ला
बाँदा

गुरू के ज्ञान और आशीर्वाद की छत्रछाया में विवेक और वैराग्य के विषय में बिखरे हुये शब्दों को अपनी कलम से पिरोने का एक सूक्ष्म प्रयास कर रहा हूँ, लेखन में हुई त्रुटियों के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ।

विवेक अर्थात् सत्–असत् का विचार और वैराग्य अर्थात् संसार की वस्तुओं के प्रति विरक्ति–उदासीनता। यह एकाएक प्राप्त नहीं होता इसके लिये नित्य अभ्यास करना पड़ता है। कामिनी और कंचन का त्याग पहले मन में ही करना चाहिये, फिर प्रभु की इच्छा से वह त्याग मन से और बाहर भी संभव हो जाता है। गीता में कहा गया है कि अभ्यास योग के द्वारा कामिनी कंचन के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो जाती है। धीरे–धीरे अभ्यास के द्वारा मन में असाधारण शक्ति पैदा होती है, तब इन्द्रिय संयम करने में काम क्रोध को वश में लाने में कष्ट नहीं उठाना पड़ता । जैसे कछुआ एक बार हाथ–पैर समेट लेने पर फिर उन्हें बाहर नहीं निकालता चाहे उस पर कितने भी कठोर प्रहार किये जायें ।

धर्म साधना का एक प्रधान अंग साधु संग एवं सत्संग कहा गया है। जैसे एक मनुष्य लकड़ी लाकर आग जलाता है तो पास में बैठे हुये कई मनुष्य उसकी गर्मी का लाभ उठाते हैं, इसी प्रकार कठोर साधना उग्र तपस्या कर जब कोई ईश्वर के अत्यधिक संनिकट हो जाता है तो उसके सम्पर्क में आकर उसके उपदेशानुसार चलकर बहुत से लोग ईश्वर की ओर अग्रसर होने लगते हैं। रामचरित मानस में भी बाबा तुलसीदास जी ने इस विषय में बहुत ही रोचक बात कही है। ''बिनु सत्संग विवेक न होई, राम कृपा बिनु सुलभ न सोई'' इस विषय में मुझे एक प्रसंग और याद आ रहा है कि जब जगत जननी भगवती गिरिराज हिमालय की कन्या उमा के रूप में अवतीर्ण हुयीं थी तो उस समय उन्होंने गिरिराज को अपने सर्व शक्तिमान स्वरूप का विभिन्न रूपों में दर्शन कराया था, पर जब रूपों का दर्शन कर गिरिराज ने भगवती से कहा बेटी वेदों में जिस ब्रम्ह के बारे में कहा गया है अब मुझे उस ब्रम्ह के दर्शन कराओ । तब देवी ने कहा कि पिताजी यदि आप ब्रम्ह दर्शन करना चाहते हो तो सर्व त्यागी साधुओं का संग करिये ।

भगवान के घर भी चाबी उल्टी दिशा में घूमने वाली होती हैं। भगवान के समीप पहुंचने के लिये तुम्हे संसार का सब कुछ त्याग करना होगा। वैराग्य दो प्रकार का होता है–तीव्र तथा मंद, तीव्र वैराग्य मानो रातोरात नहर खोदकर तालाब में पानी ले आने की तरह है। और मंद वैराग्य धीरे–धीरे सब हो जायेगा, समय का कोई बंधन नहीं जैसा है। वैराग्य का एक रूप और भी है। संसार में दुःख कष्ट पाकर जो वैराग्य आता है जिसमें सभी भोग सुख असार अनित्य होने का बोध होता है उसे यथार्थ वैराग्य कहते है। किसी में अगर यह आ जाता है तो सब कुछ होते हुये भी उसके लिये कुछ भी नहीं है। पतंगा अगर एक बार प्रकाश को देख ले तो फिर व अंधेरे में नहीं जाता, चींटी गुड़ में लिपट कर भले ही प्राण त्याग दे, पर उसे छोड़ती नहीं। इसी प्रकार भक्त की भी स्थिति होती है कि अगर ईश्वर में मन लग गया तो उसे सांसारिक कोई भी चीज अच्छी नहीं लगेगी। भले ही वह उन चीजों के मध्य ही जीवन यापन कर रहा है।

जिस प्रकार रेशम का कीड़ा अपने ही कोष में आप फंस जाता है उसी प्रकार संसारी जीव भी अपनी ही वासनाओं के जाल में आप अटक जाता है। फिर जैसे ही उस कीड़े से तितली बन जाने पर वह कोष को चीर कर बाहर उड़ जाती है वैसे ही विवेक वैराग्य रूपी पंख आ जाने पर संसार में फंसा जीव भी उसमें से उड़ निकलता है। इसलिये मन में विवेक वैराग्य के रहे बिना शास्त्र ग्रंथ पढ़ना वृथा है। विवेक वैराग्य के बिना आध्यात्मिक उन्नति असंभव है।

गुरूदेव के चरणों में शत्-शत् नमन करते हुये लेखनी को विराम!

सूर्यकुंड व सूर्यमंदिर दर्शननगर अयोध्याजी की माहात्म्य

श्री सतीश श्रीवास्तव
अध्यक्ष
प्रभु सेवा परिवार

इसे घोषार्ककुण्ड भी कहते हैं। ऐसा शिलालेख वहाँ लगा हुआ है।

धार्मिक नगरी अयोध्या के एक ऐसे चौकाने वाले पौराणिक इतिहास के बारे में आज हम आपको बताने जा रहे हैं। जिसके बारे में शायद ही आपको पता हो । भादों मास के शुक्ल पक्ष में जो अन्तिम रविवार पड़ता है उसे महारविवार कहा जाता है। भगवान सूर्य के एक चमत्कार की कहानी से आज हम आपको अवगत कराने जा रहे हैं ।

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीरामजी के प्राकट्योत्सव के अवसर पर यहीं आकर स्थिर हो गये थे, रथ सहित भगवान श्रीसूर्य नारायण।

श्रीरामचरितमानस में लिखित उल्लेख के अनुसार ऐसा कहा जाता है। जब सत्रह करोड़ वर्ष पूर्व त्रेतायुग में भगवान श्रीराम लला सरकार का प्राकट्योत्सव हुआ था । उस समय अयोध्या में 33 करोड़ देवता समस्त तीर्थ, ऋषि, मुनि, देव, गन्धर्व, किन्नर सभी आए थे। और इन सभी का मार्ग प्रशस्त करते हुए, भगवान सूर्य सबसे आगे प्रकाश फैलाते हुए चल रहे थे, उस समय मासदिवस तक इसी स्थान पर सूर्य भगवान एक जगह स्थिर रहे, अयोध्या में अंधेरा नही हुआ, और प्रकाश फैला रहा। 30 दिनों तक अयोध्या में रात्रि नहीं हुई। और सभी देवी–देवता, भगवान श्रीराम के प्राकट्य उत्सव में शामिल रहे । जिस स्थान पर रूका भगवान सूर्य का रथ, उसी स्थान पर आज स्थापित है सूर्यकुण्ड व भगवान सूर्य का पौराणिक मंदिर ।

अयोध्या के दर्शननगर में स्थित अति प्राचीन सूर्यकुंड व सूर्यमंदिर त्रेता युगीन है। भगवान सूर्य का रथ जिस स्थान पर रूका रहा, उसी स्थान पर महाराजा 'घोष' ने प्राचीन सूर्यमंदिर व सूर्यकुण्ड सरोवर का निर्माण कराया । जहां प्रतिवर्ष महारविवार के पावन अवसर पर श्रद्धा–भक्ति परिपूर्ण विशाल मेला आयोजित होता परम्परागत चला आ रहा है।

कथा – सूर्यकुंड के सरोवर में स्नान करने से ठीक हो गया था, महाराज घोष का चर्म रोग। एकबार महाराज घोष तीर्थ यात्रा करते हुए इस क्षेत्र मे आए, रात्रि होने को थी, उस समय सूनसान जंगल था, निकट सरोवर देखकर वहीं रात्रि रूक गये। धर्मात्मा राजा ब्राह्ममुहूर्त में उठे, अंधेरे में ही नित्य क्रिया के बाद इसी सरोवर में स्नान कर संध्योपासन किया, उजाला होने पर राजा ने देखा शरीर अतिशय सुन्दर स्वस्थ हो गया है, आश्चर्य हुआ राजा को भयंकर चर्मरोग था, अनेकों उपचारों के बाद ठीक नहीं हुआ था। अनजाने में ही स्नान व जलपान से चमत्कार हो गया। राजा को जिज्ञासा हुई। एक सेवक को भेजा आसपास के बूढ़े बड़े लोगों को बड़े आदर के साथ बुलाया, और गड्ढे के रूप में मौजूद इस कुंड के बारे में पूछा, इसके बारे में जानना चाहता हूँ। जिसमें स्नानकर जल पीते ही चर्म रोग ठीक हो गया । वृद्धों ने महत्व बताया, यह सूर्यकुण्ड है, और आज महारविवार है, आज के दिन इसमें स्नान का विशेष महत्व है। जिसके बाद राजा ने इस स्थान पर 7 दिनों तक तपस्या की । राजा की तपस्या से प्रसन्न होकर आकाशवाणी हुई, और राजा ने आकाशवाणी में कही हुई बात के अनुसार इस कुंड की खुदाई कराई, जिसके बाद इस कुंड के अंदर से 12 अश्वों पर सवार भगवान सूर्य की प्रतिमा, भगवान शिव का शिवलिंग और ढेर सारा खजाना प्राप्त हुआ। उसी खजाने से इस प्राचीन मंदिर और सरोवर का निर्माण कराया गया । राजा घोष ने जीर्णोद्धार कराया इससे नाम हुआ घोषार्क कुण्ड यह शिलालेख वहाँ लगा हुआ है।

भादो मास के शुक्लपक्ष महा रविवार के दिन इस पौराणिक मंदिर पर विशाल मेले का प्रतिवर्ष परम्परागत आयोजन किया जाता है। जिसमें देश भर से हजारों श्रद्धालु भक्तजन स्नान दर्शन और पूजन करने आते हैं। आज के दिन भगवान सूर्य की उपासना करने और दर्शन करने से अनेकों प्रकार की असाध्य बीमारियां समाप्त हो जाती है। और मनुष्य को सुख समृद्धि की प्राप्ति होती है, मनः कामना की पूर्ति हेतु बड़ी संख्या में श्रद्धालु महारविवार को प्राचीन सूर्य मंदिर पर मेले में शामिल होने के लिए आते हैं।

भगवान की प्रसन्नता

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
लखनऊ

गृहस्थ जीवन में रहकर यदि मनुष्य अपने वर्णाश्रम धर्म के अनुसार जीविकोपार्जन करते हुए भगवान का भजन, उसके साथ ही संत–सेवा दान–पुण्य आदि कर्म करता रहे तो इससे भगवान बहुत प्रसन्न होते हैं।

तन पवित्र सेवा कियो धन पवित्र कर दान । मन पवित्र हरि भजन कर होत त्रिविध कल्यान ।।

सेवा से तन पवित्र हो जाता है, दान से धन पवित्र हो जाता है और हरि–भजन से चित पवित्र हो जाता है–ये तीनों परम कल्याण (उत्तम गति प्राप्त कराने) के साधन है। भक्तों का चरित्र ही भक्तमाल ग्रन्थ है। इस ग्रंथ में, इसके पात्र और स्थान सत्य घटना पर आधारित हैं। भगवान की प्रसन्नता का उद्धरण उसी के अंश से है। एक नगर में रामदासजी नाम के एक बनिया थे। वे व्यापार करने के साथ–साथ भगवान की भक्ति–साधना भी करते थे और नित्य संतों की सेवा भी किया करते थे । भगवान ने अपने भक्तों (संतों) की सेवा को अपनी पूजा से श्रेष्ठ माना है, क्योंकि संत लोग अपने पवित्र संग से समाज को सद्मार्ग दिखाने, अपने जैसा संत बनाने हेतु सतत् प्रयास करते हैं।

कबिरा मन निर्मल भया, जैसे गंगा नीर । पीछे पीछे हरि फिरें, कहत कबीर कबीर ।।

इसी बात को मानकर भक्तों ने संतों की सेवा को भगवान की सेवा से बढ़कर माना है।
'प्रथम भक्ति संतन कर संगा ।'

रामदासजी सारा दिन नमक–मिर्च, गुड़ आदि की गठरी अपनी पीठ पर बांध कर गांव में फेरी लगाकर सामान बेचते थे जिससे उन्हें कुछ पैसे और अनाज मिल जाता था । एक दिन फेरी में कुछ सामान बेचने के बाद गठरी सिर पर रखकर घर की ओर चले । गठरी का वजन आज कुछ अधिक हो गया था परन्तु वह उसे जैसे–तैसे ढो रहे थे । भक्तों को समाज में उजागर करने वाले प्रभु एक किसान का रूप धारण कर आये और बोले–'भगतजी ! आपका दु:ख मुझसे देखा नहीं जा रहा है। मुझे भार वहन करने का अभ्यास है तथा मुझे भी आपके गांव के पास तक ही जाना है, मैं आपकी गठरी घर पहुंचा दूंगा ।' ऐसा कह कर भगवान ने अपने भक्त के सिर का भार अपने ऊपर ले लिया और तेजी से आगे बढ़कर आंखों से ओझल हो गये ।

सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः । मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम् ।।

गीता ''अध्याय 18 श्लोक 56'' में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–'कि मेरे परायण हुआ कर्मयोगी तो सम्पूर्ण कर्मों को सदा करता हुआ भी मेरी कृपा से सनातन अविनाशी परम पद को प्राप्त हो जाता है। रामदासजी सोचने लगे–मैं इसे पहचानता नहीं हूँ और यह भी शायद मेरा घर न जानता होगा । पर जाने दो,

होई हैं वही जो राम रचि राखा ।

यह कहकर वह रामधुन गाते हुए घर की ओर चल दिए । रास्ते में वे मन–ही–मन सोचने लगे–आज थका हुआ हूँ, यदि घर पहुंचने पर गर्म जल मिल जाए तो झट से स्नान कर सेवा–पूजा कर लूं और आज कढ़ी–फुलका का भोग लगे तो अच्छा है। उधर किसान बने भगवान ने रामदासजी के घर जाकर गठरी एक कोने में रख दी और जोर से पुकार कर कहा–भगतजी आ रहे हैं, उन्होंने कहा है कि नहाने के लिए पानी गर्म कर देना और भोग के लिए कढ़ी–फुलका बना देना ।' कुछ देर बाद रामदासजी घर पहुंचे तो उन्होने देखा कि सामान की गठरी कोने में रखी हैं। उनकी पत्नी ने कहा–'पानी गर्म कर दिया है, झट से स्नान कर लो । भोग के लिए गर्म–गर्म कढ़ी और फुलके भी तैयार हैं।' रामदासजी ने आश्चर्यचकित होकर पूछा–'तुमने मेरे मन की बात कैसे जान ली ।' पत्नी बोली–'मुझे क्या पता तुम्हारे मन की बात ? उस गठरी लाने वाले ने कहा था ।' रामदासजी समझ गए कि आज भक्त–वत्सलतावश बड़ा कष्ट मेरे प्रभु ने सहा है। उनकी आंखों से प्रेमाश्रु झरने लगे और वे अपने इष्ट के ध्यान में बैठ गये ।

ध्यान में प्रभु श्रीराम ने प्रकट होकर प्रसन्न होते हुए कहा–'तुम नित्य सन्त–सेवा के लिए इतना परिश्रम करते हो, मैंने तुम्हारी थोड़ी–सी सहायता कर दी तो क्या हुआ ?'

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः । तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ।।

अर्थात्–जो पुरूष मुझमें अनन्यचित होकर सदा ही निरन्तर मुझ पुरूषोत्तम को स्मरण करता है, उस नित्य निरंतर मुझमें युक्त हुए योगी के लिए मैं सुलभ हू अर्थात् उसे सहज ही प्राप्त हो जाता हूं। ''गीता अध्याय 8 श्लोक 14'' रामदासजी ने अपनी पत्नी से पूछा–क्या तूने उस गठरी लाने वाले को देखा था ? पत्नी बोली– 'मैं तो अंदर थी पर उस व्यक्ति के शब्द बहुत ही मधुर थे ।' रामदासजी ने पत्नी को बताया कि वे हमारे आराध्य साक्षात् श्रीराम प्रभु ही थे । तभी उन्होंने मेरे मन की बात जान ली। दोनों पति–पत्नी भगवान की भक्तवत्सलता से सजल नेत्रों से भाव–विहवल होकर रामधुन गाने में लीन हो गये

* जय जय श्री सीताराम *

गुरू महिमा

श्री ईश्वर शरन मिश्र
गोण्डा (उ०प्र०)

गुरूपूर्णिमा 21 जुलाई 2024
श्री धाम वृंदावन

स्वर्ग से सुन्दर सपनों से प्यारा है अपना गुरूद्वार
हम पर रहे बरसता युँ ही सदगुरू का प्यार
सदगुरू का प्यार न टूटे, हमारा गुरूद्वार न छूटे ।।

सदगुरू हमारे ऐसे कृपालु कराया रामलला से प्यार
सुन्दर महिमा गुरू चरणों की करती भवसागर से पार
हमारे गुरू चरणों का प्यार न छूटे हमारा गुरूद्वार न छूटे

नाक कान और गला सुधार कर कथा रसिक बनायां
माया का जाल काट कर राम प्रेम जगाया
हम पर रहे बरसता यूँ ही सदा गुरू का प्यार
गुरू का प्यार न टूटे हमारा गुरूद्वार न छूटे ।।

।। श्री गुरूदेव भगवान की जय ।।

'सा विद्या या विमुक्तये'

श्री सत्य प्रकाश राय
प्रयाग (उ. प्र.)

सा विद्या या विमुक्तए यह उक्ति हम बचपन से पढ़ते आए हैं। इसका इतना तात्पर्य समझ में आया था कि सांसारिक बंधनों दुःखो से मुक्ति विद्या से ही हो सकती है। इसी प्रकार एक उक्ति है–ऋते ज्ञानान्मुक्ति : अर्थात ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। यह दोनों उक्तियाँ प्रायः समान है तथा इससे हम विद्या तथा ज्ञान को एक–दूसरे का पर्याय समझते रहे। इसी प्रकार अविद्या के बारे में कठोपनिषद का यह श्लोक है।

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः, स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः। दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा अंधेनैव नीयमाना यथान्धाः ।।

यह श्लोक मुंडकोपनिषद में भी उद्धृत है। उसमें दन्द्रम्यमाणाः के स्थान पर जङ्घन्यमानाः शब्द का प्रयोग किया गया है अर्थ तथा आशय दोनों का ही यही है कि जो लोग अविद्या के अंदर ही वास करते हैं तथा स्वयं को धीर एवं महापंडित समझते हैं वह वास्तव में मूढ हैं तथा उसी प्रकार ठोकरें (चोट) खाते हुए भटकते हैं जैसे अंधे के द्वारा ले जाये जाने वाले अंधे । इस श्लोक को भी हम वैसा ही समझते थे जैसा कबीर दास जी ने कहा है कि–

जाका गुरू भी अंधला चेला खरा निरंध । अंधे अंधा ठेलिया द्वन्यू कूप परंत ।।

कबीर दास जी का यह दोहा गुरू तथा शिष्य दोनों के अज्ञान को इंगित करता है। इसी प्रकार कठोपनिषद तथा मुंडकोपनिषद में उधृत अविद्या को भी हम अज्ञान का पर्याय ही मानते रहे। गत रक्षाबंधन के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ लखनऊ (दक्षिण प्रभाग) द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में सेवा भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री माननीय सुधीर कुमार जी का व्याख्यान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ था, जिसमें उन्होंने वेदों में वर्णित पंचयज्ञों: ब्रम्ह यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, वेश्वदेव यज्ञ तथा अतिथि यज्ञ का उल्लेख किया था जो सभी मनुष्यों को अपने जीवन में करना चाहिए। अपने उद्बोधन में उन्होंने इन यज्ञों के द्वारा प्रकृति पर्यावरण, पंच भूतः पृष् जल, तेज, वायु, आकाश के संरक्षण, माता–पिता, गुरू, अतिथि, पशु–पक्षियों, वनस्पतियों तथा समाज के प्रति मनुष्य कर्तव्यों का उल्लेख विस्तार पूर्वक किया था ।

ब्रह्म यज्ञ के बारे में उन्होंने बताया कि ज्ञानार्जन तथा ज्ञानदान ही ब्रम्ह यज्ञ है। ज्ञान की दो श्रेणियाँ विद्या तथा अविद्या है। विद्या तथा अविद्या एक दूसरे की विलोम न होकर, एक दूसरे की पूरक हैं। विद्या वह है जो मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त करती है। किन्तु हम जो विद्यालय में भाषा, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषय पढ़ते हैं वह लौकिक ज्ञान है जो अविधा की श्रेणी में आते हैं।विद्या एवं अविद्या दोनों ज्ञान मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं। उनका यह कथन मुझे अत्यंत सारवान लगा तथा अविद्या को अज्ञान समझने का जो भ्रम था वह समाप्त हो गया । इस विषय के प्रति मन में जिज्ञासा भी उत्पन्न हुई तथा जो कुछ पढ़ा था उसको फिर से समझने प्रयास किया । ब्रह्मविन्दूपनिषद में यह उल्लेख है किः–

द्वे विद्ये वेदितव्ये, शब्द ब्रह्म, परं च यत् । शब्द ब्रह्मणि निष्णातः, परं ब्रह्माधिगच्छति ।।

यहाँ जो सामान्य अर्थ समझ में आया है वह यही कि शब्द ब्रह्म अर्थात वाणी और अर्थ का ज्ञान होने पर ही वेदों उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म का ज्ञान होता है। किंतु मुंडकोपनिषद में इन दोनों विद्याओं का उल्लेख इस प्रकार है–

द्वे विधे वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदंति परा चैवापरा च ।
तत्रापरा ऋग्वेदो, यजुर्वेदः, सामवेदोथर्ववेदः, शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तो छंदो ज्योतिषमिति।
अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ।

इसमें वेदों, शास्त्रों को अपरा विधा तथा ब्रह्म का ज्ञान कराने वाली विद्या को परा विद्या कहा है। यही वर्गीकरण अग्निपुराण में भी है जिसके अनुसार चारों वेद छः शास्त्र, मीमांसा, धर्मशास्त्र, पुराण न्याय, आयुर्वेद, गांधर्ववेद, धनुर्वेद, अर्थशास्त्र यह सब अपरा विद्या हैं, जिन्हें ब्रह्मबिंदु उपनिषद में शब्द ब्रह्म कहा गया है। जिससे उस अदृश्य अग्राह्य गोत्र रहित, चरण रहित, नित्य, अविनाशी ब्रह्मका बोध हो वह परा विद्या है। भगवत गीता में भी इन दोनों विद्याओं को परिभाषित किया गया है। अनेक ग्रंथों में विद्या के कई प्रकार के वर्गीकरण मिलते हैं जिन्हें समझना सामान्य मनुष्य के लिये अत्यंत दुरूह है। किन्तु ब्रह्म का बोध कराने तथा मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कराने वाली विद्या के रूप में सर्वत्र योगविद्या को स्वीकार किया गया है। योग विद्या सिर्फ आसन प्राणायाम या दिखावा नहीं है, यह सिर्फ शारीरिक एवं मानसिक रोग मुक्ति नहीं है वरन जीवन के समस्त दुखों से मुक्ति का मार्ग है। विपश्यना ध्यान योग एकमात्र ऐसी विद्या है जो मनुष्य को जीवन में पा लेनी चाहिए क्योंकि विद्या सिर्फ और सिर्फ मनुष्य ही पा सकता है अन्य प्राणी नहीं ।

भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को योग के महत्व को समझाते हुए इसे अत्यंत प्राचीन विद्या बताया है जो बीच में लुप्त हो गई थी । गीता के अध्याय 4 में भगवान श्री कृष्ण ने इसकी प्राचीनता का उल्लेख करते हुए कहा कि– हे अर्जुन इस योग का ज्ञान मैंने सर्वप्रथम सूर्य को दिया था। उन्होंने इसका ज्ञान अपने पुत्र वैवस्वत मनु को दिया, मनु ने इक्ष्वाकु को दिया। इसी तरह परंपरा से यह योग राजर्षियों को मिला। किंतु कालांतर में इसका लोप हो गया। तुम मेरे भक्त और सखा हो अतः इस पुरातन योग का वर्णन मैंने तुमसे किया। विपश्यना भी एक अद्भुत ध्यान प्रयोग है भगवान बुद्ध ने विपश्यना के द्वारा ही बुद्धत्व को प्राप्त किया था तथा इसका अभ्यास उन्होंने सरलतम विधि से अपने शिष्यों को भी कराया। भारत में बौद्ध धर्म के ह्रास के साथ इसका भी लोप हो गया। सदियों के बीतने के साथ, कुछ देशों में, बुद्ध की शिक्षाएँ मूल, प्रामाणिक रूप में नहीं रही, लेकिन म्यांमार में लोगों ने पीढ़ी–दर–पीढ़ी अपनी प्राचीन शुद्धता में बुद्ध के शब्दों और विपश्यना ध्यान की तकनीक को संरक्षित रखा। इस समृद्ध परंपरा के तहत म्यांमार के एक वरिष्ठ सिविल सेवक, सयागी ऊ बा खिन ने विपश्यना की तकनीक सीखी और अपार प्रेम और करूणा से कई छात्रों को पढ़ाया। भारतीय मूल के धनी व्यापारी श्री एस. एन. गोयनका जिनका जन्म म्यांमार में ही हुआ था उनमें से एक थे । 14 साल तक इस तकनीक में खुद को मजबूती से स्थापित करने के बाद, श्री गोयनका को 1969 में सयागी ऊ बा खिन द्वारा विपश्यना ध्यान के प्रमुख शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था । सयागी ऊ बा खिन की तीव्र इच्छा थी कि विपश्यना ध्यान की तकनीक भारत में अपनी प्राचीन शुद्धता में लौट आए। श्री गोयनका 1969 में भारत लौटे। तथा भारत में विपश्यना ध्यानकेन्द्रों की स्थापना करके विपश्यना ध्यान योग की शिक्षा प्रारंभ की। ज्ञान, ध्यान, योग आदि से मनुष्य मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है किंतु वह जीवन भर कर्म करता है जो बंधन के कारण बन सकते हैं। इसे दृष्टि गत रखते हुए विष्णु पुराण में कहा गया है कि–

तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये । आयासायापरं कर्म विद्याऽन्या शिल्पनैपुणम् ।।

अर्थात् कर्म वही है जो बन्धनकारक न हो, विद्या वही है जो मुक्तिकारक हो । इसके अतिरिक्त अन्य कर्म प्रयास मात्र है, और अन्य विद्या शिल्प–निपुणता मात्र है। ऐसे कर्म को निष्काम कर्म कहा गया है जिस की विस्तृत व्याख्या गीता में की गयी है, जिसकी जानकारी प्रायः सबको है। फलतः इस पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती । वस्तुतः मुक्ति के लिए विद्या (परा विद्या), अविद्या (अपरा विद्या) तथा निष्काम कर्म सभी एक साथ आवश्यक है जैसा ब्रह्म बिंदु उपनिषद में स्पष्ट किया गया है कि शब्द ब्रह्म (अपरा विद्या) में निष्णात मनुष्य ही परब्रह्म (परा विद्या) को जान सकता है ईशावास्योपनिषद के अनुसार –

विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयं सह । अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ।।

इसका शाब्दिक अर्थ यह है कि जो विद्या और अविद्या–इन दोनों को ही एक साथ जानता है, (जो तत् अर्थात ब्रह्म को इस रूप में जानता है कि वह एक साथ विद्या तथा अविद्या दोनों है) वह अविद्या से मृत्यु को पार करके विद्या से अमृतत्त्व (देवत्व) प्राप्त कर लेता है। यद्यपि ज्ञान, योग, निष्काम कर्म को सभी ग्रंथों में मुक्ति का मार्ग बताया गया है किन्तु इस मार्ग को बहुत दूरूह बताया गया है। इसकी तुलना में भगवद्भक्ति को मुक्ति का सहज एवं सुगम मार्ग बताया गया है। यहाँ तक कि भगवत भक्ति को मोक्ष से भी अधिक कल्याणकारी एवं मधुर फल कहा गया है। गीता में योग तथा निष्काम कर्म के व्याख्याता भगवान श्री कृष्ण ने भी अंत में अर्जुन से यही कहा कि–

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरू । मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ।।

तुम मुझमें स्थिर मन वाले वाले बनो, मेरे भक्त और मेरा पूजन करने वाले बनो, मुझे नमस्कार करो, इस प्रकार मत्परायण आत्मा को मुझसे युक्त करके तुम मुझे ही प्राप्त होओगे । यह मै तुम्हारे सम्मुख सत्य प्रतिज्ञान कर रहा हूँ क्योंकि तुम मेरे प्रिय हो। रामचरितमानस तो भक्ति की महिमा से भरी पड़ी है तथा यहाँ तक कहा गया है कि भक्ति के विना मुक्ति रह ही नहीं सकती अतः बुद्धिमान हरि भक्तों ने मुक्ति की अपेक्षा करके भक्ति की ही कामना की । यह भक्ति कठिन साधना किये विना ही संतों की संगति से ही सुलभ हो जाती है। किन्तु राम कथा के श्रवण एवं गायन मात्र से भी भक्ति तथा मुक्ति प्राप्त हो जाती है। भगवान शंकर ने देवी गिरिजा को राम कथा सुनाने के बाद अंत में यही कहा था कि–

राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्वान । भाव सहित सो यह कथा करउ स्रवन-पुट पान ।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामकथा का उपसंहार करते हुए अंत में लिखा है कि–

रघुवंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं । कलिमल मनोमल धोई बिनु स्रम राम धाम सिधावहीं ।

भक्ति की महिमा अपरंपार है उसका वर्णन करना किसी के बस में नहीं तथा भगवद् गीता एवं रामचरितमास ज्ञान तथा भक्ति के आगार हैं जो सर्व सुलभ हैं। अतः हम सबको निरंतर इनका गायन तथा श्रवण करना चाहिये । यही परमार्थ है।

धरम न अरथ न काम रूचि, गति न चहाँ निरवान । जनम जनम रति राम पद, यहु बरदान न आन ।।

निर्मल भक्ति का दान

श्रीमति अन्जू श्रीवास्तव
ग्रेटर नोएडा

केवट का प्रेम और गंगा पार जाना

रामायण में वर्णित एक एक घटना अपने आप में मनुष्यों के लिए मार्गदर्शन स्थापित करता है। लेकिन कुछ घटनाये ऐसी हैं जिसे हम बार–बार पढ़ते हैं फिर भी संतुष्ट नहीं होते। उन्ही घटनाओं में से एक है भगवान राम और केवट का प्रसंग। यह घटना उस समय की है जब भगवान राम अपने पिता के वचनों की रक्षा के लिए अपनी पत्नी और छोटे भाई लक्ष्मण के साथ वनवास जा रहे थे। वन के मार्ग में एक स्थान पर उन्हें गंगा नदी पार करना था । उनके साथ उस समय निषादराज गुह भी थे जो भगवान राम की मदद के लिए साथ में थे। गंगा तट का वह प्रदेश निषादराज के राज्य क्षेत्र में था। तट पर पहुँचने के बाद निषादराज ने उस घाट के केवट को यह सुचना दी की भगवान राम नदी पार करना चाहते हैं इसलिए वह जल्द उपस्थित हो। भगवान राम के आगमन की खबर सुनकर केवट की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। साधारण सा दिखने वाला वह केवट दरअसल भगवान राम का एक बहुत बड़ा भक्त था। वह यह जानता था कि भगवान के चरणों में तीनो लोकों की सत्ता है, और पूर्ण मुक्ति का मार्ग है। वह किसी भांति भगवान के चरणों में समर्पित होना चाहता था। भगवान राम की चरण बंदना के लिए उसने अति अनूठा मार्ग चुना। प्रेम और भक्ति से जुडा यह प्रसंग अपने आप में इतना अनूठा है कि हजारो सालों के बाद भी जब जब रामायण का जिक्र होता है तो केवट का जिक्र जरूर होता है। भगवान राम और केवट के इस प्रसंग को गोस्वामी तुलसीदास ने राम चरित मानस में बहुत ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। रामचरित मानस में वर्णित वह प्रसंग इस प्रकार है : अयोध्याकांड –

मागी नाव न केवटु आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ।। चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई ।।

श्रीराम ने केवट से गंगा पार जाने के लिए नाव माँगा, पर वह लाता नहीं। वह कहने लगा– मैंने तुम्हारा मर्म जान लिया है। सब लोग कहते हैं कि आपके चरणों में कोई जादू है जो किसी वस्तु को मनुष्य बना देती है।

छुअत सिला भइ नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ।। तरनिउ मुनि घरिनी होई जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ।।

जिसके छूते ही अहिल्या पत्थर की शिला सुन्दर स्त्री हो गई। मेरी नाव तो काठ की है काठ पत्थर से कठोर तो होता नहीं। मेरी नाव भी मुनि की स्त्री अहिल्या की तरह स्त्री हो जाएगी, तब तो मैं लुट जाऊँगा मेरी कमाने–खाने की राह ही मारी जाएगी।

एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू ।। जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू ।।

मैं तो इसी नाव से सारे परिवार का पालन–पोषण करता हूँ। दूसरा कोई धंधा नहीं जानता। है प्रभु! यदि आप अवश्य ही पार जाना चाहते हैं तो मुझे पहले अपने चरणकमल पखारने की आज्ञा दें।

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं । मोहि राम राउरि आन दसरथसपथ सब साची कहौं ।।
बरू तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं । तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारू उतारिहौं ।।

हे नाथ! मैं चरण कमल धोकर आप नाव पर सवार करूँगा, अपने चरण पखारने के अलावा मैं कोई और उतराई नहीं चाहता । हे राम! मुझे आपकी दुहाई और दशरथजी की सौगंध है, मैं सब सच–सच कहता हूँ। तुलसीदास कहते हैं, केवट ने कहा, हे नाथ! हे कृपालु! भले ही लक्ष्मण मुझे तीर मार दे, पर जब तक मैं पैरों को पखार न लूँगा, तब तक मैं पार नही उतारूँगा।

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे । बिहसे करूनाऐन चितइ जानकी लखन तन ।।

केवट के प्रेम और भक्ति से युक्त अटपटे वचन सुनकर करूणाधाम श्री रामचन्द्रजी जानकीजी और लक्ष्मणजी की ओर देखकर हंस पड़े

कृपासिंधु बोले मुसुकाई । सोइ करू जेहिं तव नाव न जाई ।। बेगि आनु जलपाय पखारू । होत बिलंबु उतारहि पारू ।।

कृपा के समुद्र श्री रामचन्द्रजी केवट से मुस्कुराकर बोले भाई! ठीक है तुम वही करो जिससे तुम्हारी नाव न जाए । जल्दी पानी लाकर पैर धो लो । देर हो रही है, हमे पार उतार दो ।

जासु नाम सुमिरत एक बारा । उतरहिं नर भवसिंधु अपारा ।। सोइ कृपालु केवटहि निहोरा । जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा ।।

यह देखकर गंगाजी सोचने लगीं। एक बार जिनका नाम स्मरण करते ही मनुष्य अपार भवसागर के पार उतर जाते हैं और जिन्होंने जगत को तीन पग से भी छोटा कर दिया था दो ही पग में त्रिलोकी को नाप लिया था, वही कृपालु श्री रामचन्द्रजी गंगाजी से पार उतारने के लिए केवट से बिनती कर रहे हैं।

पद नख निरखि देवसरि हरषी । सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी ।। केवट राम रजायसु पावा । पानि कठवता भरि लेइ आवा ।।

श्री राम द्वारा केवट से बिनती करता देखकर गंगाजी की बुद्धि थोड़े समय के लिए मोहित हो गई कि ये साक्षात भगवान होकर भी पार उतारने के लिए केवट का निहोरा कैसे कर रहे हैं, परन्तु श्री राम के चरणों के पदनखों को देखते ही, उन्हें पहचानकर, देवनदी गंगाजी हर्षित हो गईं। वे समझ गईं कि भगवान नरलीला कर रहे हैं, केवट श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर कठौते में भरकर जल ले आया ।।

अति आनंद उमगि अनुरागा । चरन सरोज पखारन लागा ।। बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं । एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं ।।

तब अति आनंद और भक्ति से पूर्ण केवट भगवान राम के कमल के समान सुंदर चरणों को पखारने लगा । सब देवता फूल बरसाकर निहारने लगे कि केवट के समान कोई और भाग्यशाली नहीं है जिसने स्वयं भगवान के चरणों को पखारने का अवसर पाया।

पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार । पितर पारू करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार ।।

चरणों को धोकर केवट ने और उसके पुरे परिवार ने उस पवित्र जल को पिया। इस प्रकार उसने अपने सहित पुरे परिवार को मोक्ष का भागी बनाया। उसके बाद वह आनंदपूर्वक प्रभु श्री राम को गंगा के पार ले गया ।

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामुगुह लखन समेता ।। केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एति नहिं कछु दीन्हा ।।

निषादराज और लक्ष्मणजी सहित श्री सीताजी और श्री रामचन्द्रजी नाव से उतरकर दूसरी ओर गंगाजी की रेत में खड़े हो गए। तब केवट ने उतरकर श्री राम को दण्डवत प्रणाम किया। उसको दण्डवत करते देखकर प्रभु को संकोच हुआ कि इसको कुछ दिया नहीं।

प्रिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ।। कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ।।

पति के हृदय के भाव को जानकर सीताजी ने आनंद भरे मन से अपनी रत्न जड़ित अँगूठी उतारकर दी। कृपालु श्री रामचन्द्रजी ने केवट से कहा, नाव की उतराई लो। केवट ने व्याकुल होकर चरण पकड़ लिए।

नाथ आजु मैं काह न पावा । मिटे दोष दुख दारिद दावा ।। बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी । आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी ।।

उसने कहा– हे नाथ! आज मुझे तो सबकुछ मिल गया! मेरे दोष, दु:ख और दरिद्रता की आग आज बुझ गई है। मैंने बहुत समय तक मजदूरी की। विधाता ने आज बहुत अच्छी भरपूर मजदूरी दे दी अनंत काल के परिश्रम का पूर्ण फल मुझे मिल गया ।

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें । दीन दयाल अनुग्रह तोरें ।। फिरती बार मोहि जो देबा । सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा ।।

हे नाथ! हे दीनदयाल! आपकी कृपा से अब मुझे कुछ और नहीं चाहिए। लौटती बार आप मुझे जो कुछ देंगे, वह प्रसाद मैं सिरोधार्य करूँगा। इस प्रकार केवट ने यह आग्रह भी किया कि लौटते समय प्रभु दुबारा उसे सेवा का अवसर दें।

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ । बिदा कीन्ह करूनायतन भगति बिमल बरू देइ ।।

प्रभु श्री राम, लक्ष्मण और सीताजी ने बहुत आग्रह किया, पर केवट ने कुछ नहीं लिया । तब करूणा के धाम भगवान श्री रामचन्द्र जी ने मिर्मल भक्ति का वरदान देकर उसे विदा किया। केवट ने श्री राम से उतराई में कुछ भी नहीं लिया बल्कि उसने यह वरदान माँगा कि वह सदैव भगवान राम का भक्त रहे और उनके चरणों में उसे स्थान प्राप्त हो। उसके इस निर्मल और निष्काम भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान ने उसे निर्मल भक्ति का वरदान दिया।

भगवान के अनंत भक्त है लेकिन केवट जैसी निर्मल भक्ति का उदहारण कम ही मिलता है। केवट को अपने जीवन में बस कुछ ही पल मिले और उन पलों का केवट ने पूर्ण उपयोग किया। अपना ही नहीं उसने अपने पुरे परिवार और सभी पूर्वजों का भी उद्धार किया। केवट की भक्ति हम सब के लिए आज भी एक उदहारण है जो यह साबित करता है कि अगर मनुष्य की भक्ति पवित्र हो तो उसका सम्पूर्ण उद्धार होना निश्चित है। ईश्वर कभी भक्त को निराश नहीं करते है।

व्यक्तिगत संस्मरण

श्री सुरेन्द्र शर्मा (पंकज)
खेल विशेषज्ञ एवं पत्रकार

एक रोज में अपने मोबाईल पर यूट्यूब देख रहा था कि अचानक एक साधारण सी वेशभूषा धारी संत द्वारा कही जा रही ''श्रीराम कथा'' पर मेरी नजर रूक गयी क्योंकि वो संत मानस के ''उत्तर काण्ड'' में वर्णित ''कागमिशुण्डि–गरूड़ संवाद'' का विस्तार से बड़ी सरल भाषा में वर्णन कर रहे थे । मेरी बाल्यकाल से ही ''श्रश्राम कथा'' सुनने में रूचि रही है।

बस फिर क्या था । मैं अगले दिन से प्रतिदिन परम श्रद्धेय संत श्री रमेश भाई शुक्ला जी द्वारा की गई व्याख्या को सुनने लगा और पूरी व्याख्या को सुनकर मेरा मन गद्‌गद् हो उठा और श्रीराम तत्व की आनन्दमयी फुहारें मेरे अन्तःकरण में हिल्लौरे मारने लगी । मेरे मन में बार–बार ये विचार आ रहा था कि मैं क्यूँ न इस परम संत की अध्यात्मिक स्वर लहरी को लेखिनीबद्ध करके अपने जीवन को धन्य बना लूँ ।

मैं स्वयं को अति बड़नागी मानता हूँ कि मेरा जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ । मेरे पिता जी पं0 राम कृष्ण व माता श्रीमति सावित्री देवी अत्यन्त धार्मिक थे और उनके सत्कर्मो के फलस्वरूप हम सभी चारों भाई अधिकारी के रूप तथा दोनों बहने मुख्य शिक्षिका के रूप में सेवा निवृत हुए ।

मुझे अपने भाई डा0 ब्रजमोहन जिनका अब स्वर्गवास हो चुका है, और अपने पिता जी से साहित्य लेखन में काफी प्रेरणा मिली । प्रो0 यशपाल वैद ने मेरी लेखिनी को सुधारा और स्व0 राजेश गुप्ता, पत्रकार ने अपने सांध्य समाचार पत्र ''दैनिक प्रैस की आवाज'' में मेरे लेख प्रकाशित कर मुझे प्रोत्साहित किया ।

मुझे और मेरे परिवार को स्वामी अवधेशानन्द जी गिरि, स्वामी दिव्यानन्द तीर्थ, युग पुरूष स्वामी श्री परमानन्द जी महाराज, स्वामी दयानन्द गिरि जी, महामण्डलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी बाबा रिजकदास जी महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी सत्यात्मानन्द जी म, स्वामी वेदान्तानन्द जी म, स्वामी प्रेम दास शास्त्री, श्री विजय कौशल जी श्री मृदुल कृष्ण शास्त्री, श्री कृष्ण चन्द्र ठाकुर, डा0 अनुनवानन्द जी गिरि, सुत्री हेमलता जी मुद्‌गल (मेरे गुरूदेव जी), सुश्री डा0 विश्वेश्वरी जी म आदि अनेक संत–महात्माओं को आशीर्वाद मिला ।

बस इन दिव्यात्माओं के शुभ आशीर्वाद से मैने ''उत्तर काण्ड'' पर संत श्री रमेश भाई शुक्ला, लखनऊ द्वारा की गई नवदिवसीय कथा को सुना, फिर कच्चा लिखा तत्पश्चात् अन्तिम रूप देकर लेखिनीबद्ध किया । फिर यू–ट्यूब पर खोज कर अन्य काण्डों की कथा को एक पत्रकार के रूप में सुनना शुरू कर दिया । करोना काल का मैने भरपूर लाभ उठाया और शेष काण्डों की कथा को लेखिनीबद्ध करने लगा ।

मुझे दूरभाष पर संत श्री रमेश भाई शुक्ला ने बताया कि वो चण्डीगढ़ में श्री गूगा माड़ी मन्दिर में श्रीराम कथा करने आ रहे है। मैं सपरिवार और सुप्रसिद्ध कर्मकाण्डी और भगवताचार्य पं0 अवधेश शांडिल्य को लेकर कथा स्थल पर पहुँचा । दुर्भाग्यवश हम कथा का आन्नद तो नहीं ले पाये मगर हमारी महाराज जी से भेंट हो गयी । उन्होंने बताया कि आज कथा समापन दिवस था सो कथा प्रातःकाल में हो गयी और हम भी जाने की तैयारी करने में लगे है। मैनें अपना अल्प–सा परिचय दिया और उनके प्रवचनों की एक प्रति उनकी और बढ़ा दी । चन्द पंक्तियाँ पढ़ कर वो अत्यन्त प्रसन्न हुए। मेरी पीठ थपथपाते हुए बोले ''पंडित जी ये तो आप पर श्रीराम की कृपा और माँ सरस्वती की अनुकम्पा का परम फल है। हम तो मात्र कह कर गद्‌दी से उतर आते है मगर आपने तो मुझे और मेरे प्रवचनों की माला में पिरो दिया है ''धन्य है आप'' ''धन्यवाद मैं बोला'' आप अगर आज्ञा करेंगे तो में अन्य काण्डो पर भी लिख दूँ–।''

महाराज जी ने मेरे सिर पर हाथ हाथ फेरते हुए कहा–'' अरे । मैं कोन होता हूँ आज्ञा देने वाला जब आपको हनुमान जी प्रेरणा दे रहे हैं और आपको भगवान श्रीराम का आर्शीर्वाद भी मिल रहा है तो लिखो – मैं अति प्रसन्न हूँ।''

मैं सोचता हूँ कि संत रमेश भाई शुक्ला जी की कृपा भगवतकृपा से ही मुझे मिली है। मैं लेखिनी से और मन से पवित्र और राममये हो रहा हूँ। तात्विक मथानी वाले संत श्री रमेश भाई शुक्ला जी मुझ पर सदा अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखेंगे। मैं कभी भी उनके अतुलनीय व्यक्तित्व न भूला पाऊँगा ।

रामहि केवल प्रेम पियारा

पं० श्री राम अधार पाण्डेय
प्रयागराज

भगवान को केवल प्रेमी भक्त ही प्रिय है।

श्रीमद् भगवत महापुराण में गोपियाँ न तपस्या किया न योग साधना की न स्वाध्याय करके ज्ञान प्राप्त किया मात्र श्री कृष्ण (कन्हैया) से अतिशय प्रेम करके महारास का आनन्द प्राप्त किया । गोपियो के प्रेम बन्धन में बँध कर उनके ऋणी हो गये । श्रीराम चरित मानस में भी गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने लिखा –

रामहि केवल प्रेम पियारा ।
जानि लेहु जो जाननि हारा ।।
मिलहि न रघुपति विनु अनुरागा ।
किये जोग तप सान विरागा ।।

हम सही साधक भक्तों को भगवान से अतिशय प्रेम करना चाहिए । प्रेम ही भगवान को पाने और इस भव सिन्धु से पार होने मार्ग है। हम जो भी कार्य करें तो भगवान के लिए ही करें– स्नान, ध्यान, पूजन, स्वाध्याय एवं दान परोपकार आदि। कलियुग में भगवान के नाम का जप एवं संकीर्तन सभी शास्त्रों सार है। आनु भजन भी करें नाम लेत भव सिन्धु सुखाही ।

नाम लेत भव सिन्धु सुरवाही ।
करिअ विचार सुजन मन माही ।।
नाम संकीर्तनम् यस्य सर्व पाप प्रणाशनम् ।
प्रणामो दु:ख शमनः तं नमामि हरिम् परम ।।

।। जय सियाराम जय जय हनुमान ।।

'सहसा विद्धीत न क्रियाम्'

श्री रमेश कुमार दीक्षित
लखनऊ

परम पूज्य श्री गुरूदेव श्रीरामचरितमानस की निम्नांकित चौपाइयों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि किसी कार्य को बिना सोचे–विचारे अनायास नहीं करना चाहिये ।

1. मंत्रिन्ह सहित इहाँ एक बारा ।
   बैठ रहेउँ मैं करत विचारा ।।   – किष्किन्धाकाण्ड
   केवल विचार हुआ, इसे कर्म में परिवर्तित नहीं किया गया । परिणाम शून्य रहा ।
2. तरू पल्लव गहुँ रहा लुकाई ।
   करइ विचार करौं का भाई ।।   – सुन्दरकाण्ड
   विचार करने के उपरान्त कर्म किया गया तो सफलता मिली अर्थात सीता (भक्ति) की प्राप्ति हुई।
3. कहहु कवन भय करिअ बिचारा ।
   नर कपि भालु, अहार हमारा ।।   – लंकाकाण्ड
   बिना विचारे कार्य किया गया, परिणामस्वरूप भयंकर मारा–मारी (युद्ध) हुआ । सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।

वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ।।30।।

(क्रियां सहसा न विदधीत् अविवेकः आपदां परम् पदम, विमृश्यकारिणं हि गुणलुब्धाः सम्पदः स्वयम् एव वृणुते।)

किसी कार्य को बिना सोचे–विचारे अनायास नहीं करना चाहिए । विवेकहीनता आपदाओं का परम या आश्रय स्थान होती है। अच्छी प्रकार से गुणों की लोभी संपदाएं विचार करने वाले का स्वयमेव वरण करती है, उसके पास चली आती हैं।

अभिवर्षति यो9नुपालयन्विधिबीजानि विवेकवारिणा ।
स सदा फलशालिनी क्रियां शरदं लोक इव अधितिष्ठति ।।31।।

(यः विधिबीजानि विवेकवारिणा अनुपालयन् अभिवर्षति सः सदा फलशालिनी क्रियां लोकः शरदम् इव अधितिष्ठति ।)

जो कृत्य या करने योग्य कार्य रूपी बीजों को विवेक रूपी जल से धैर्य के साथ सींचता है वह मनुष्य फलदायी शरद ऋतु की भांति कर्म – साफल्य को प्राप्त करता है। इन श्लोकों में जो भाव व्यक्त किए गये हैं वे कुछ हद तक इस दोहे में निहित है:

"बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय, काम बिगाड़े आपनो जग में होत हंसाय ।"

कोई भी कार्य उसके संभावित परिणामों पर सावधानी से विचार करने के बाद ही संपन्न करना चाहिए, न कि जल्दबाजी में जैसा कि आदमी कभी–कभी कर बैठता है। हड़बड़ी में काम बिगड़ जाते है, यह सुविख्यात है। जल्दबाजी के परिणाम यदि गंभीर रूप से हानिकर न हों तो कोई बात नहीं । लेकिन कभी–कभी ऐसा होता है कि सुधार करने या परिणाम पलटने के उपाय बचते ही नहीं, और केवल पश्चाताप करने को रह जाता है।

प्रथम श्लोक में कहा गया है कि संपदाएं गुणी व्यक्ति का वरण करती हैं। मेरे विचार से यहाँ गुण शब्द एक विशेष अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। नीतिकार का इशारा उन गुणों से है जिसके माध्यम से व्यक्ति किसी कार्य के लिए समुचित अवसर तलाशता है, उसे, कब और कैसे सिद्ध करें इसका निर्णय लेता है और तदर्थ संसाधन जुटाता है। यहां गुण शब्द का अर्थ सद्गुणों से नहीं है। परिणामों का सही आकलन करके कार्य करने का कौशल ही गुण है।

दूसरे श्लोक में नीतिकार ने कार्य को फसली बीज की, बुद्धिमत्ता को पौधे को सींचने हेतु जल की, फलप्राप्ति को शरद–ऋतु में तैयार फसल की उपमा दी है।

(परम पूज्य श्री गुरूदेव के प्रवचन से साभार)

हमारे सदस्यगण

प्रभु सेवा परिवार ने अपने उद्देश्य के प्रचार के लिए कई सदस्य बनाए हैं। सदस्यों के विवरण इस प्रकार है।

श्री सतीश श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1009

श्री निरंजन कु० अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1016

श्री संजय कु० उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1023

श्रीमती अंजू श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1010

श्री ललित प्र० जोशी
सदस्य आईडी: 1017

श्री जितेंद्र कु० उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1024

श्री अभिषेक श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1011

श्री ओम प्रकाश पान्डेय
सदस्य आईडी: 1018

श्री अरविंद श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1025

श्री अरूण कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1012

श्री बलदाऊ जी श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1019

श्री बालमुकुंद पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1026

श्री भूपेंद्र गुप्ता
सदस्य आईडी: 1013

श्री शिवपूजन लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1020

श्री रमेश कुमार दीक्षित
सदस्य आईडी: 1027

श्री राकेश अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1014

श्री विष्णु शंकर दूबे
सदस्य आईडी: 1021

श्रीमती इति अग्रवाल
सदस्य आईडी: 1028

श्री सत्येंद्र कु० श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1015

श्री संदीप सिंह
सदस्य आईडी: 1022

श्री जानकी प्रसाद माहेश्वरी
सदस्य आईडी: 1029

हमारे सदस्यगण

श्री बी० बी० लाल
सदस्य आईडी: 1030

श्री अलेन्द्र कुमार शर्मा
सदस्य आईडी: 1037

श्री बृज राज पांडे
सदस्य आईडी: 1044

श्री आर० पी० पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1031

श्री सत्य प्रकाश राय
सदस्य आईडी: 1038

श्री सुशील कुमार शुक्ला
सदस्य आईडी: 1045

श्री ए० एन० लाल श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1032

श्रीमती सुनीता उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1039

श्री उमेश चन्द्र दीक्षित
सदस्य आईडी: 1046

श्री ईश्वर शरण मिश्रा
सदस्य आईडी: 1033

श्रीमती रंजना शुक्ला
सदस्य आईडी: 1040

श्री किशन दास तिवारी
सदस्य आईडी: 1047

श्री विनोद शर्मा
सदस्य आईडी: 1034

श्रीमती अर्चना उपाध्याय
सदस्य आईडी: 1041

श्री सोहन लाल शुक्ला
सदस्य आईडी: 1048

श्री आशुतोष श्रीवास्तव
सदस्य आईडी: 1035

श्री इकान्त गुप्ता
सदस्य आईडी: 1042

श्री राजेन्द्र नाथ चौबे
सदस्य आईडी: 1049

श्रीमती शिप्रा दीक्षित
सदस्य आईडी: 1036

श्री ओमप्रकाश पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1043

श्री बलराम सिंह यादव
सदस्य आईडी: 1050

हमारे सदस्यगण

श्री दिनेश कुमार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1051

श्री अवनीश कुमार मिश्रा
सदस्य आईडी: 1058

श्री दाऊ लाल तिवारी
सदस्य आईडी: 1065

श्री प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1052

श्री निवास पांडे
सदस्य आईडी: 1059

श्रीमती लक्ष्मी शर्मा
सदस्य आईडी: 1066

श्रीमती शीला शर्मा
सदस्य आईडी: 1053

श्री अंकित मिश्र
सदस्य आईडी: 1060

श्री शेष नारायण दुबे
सदस्य आईडी: 1067

श्री राम आधार पांडेय
सदस्य आईडी: 1054

श्री प्रेम प्रकाश शर्मा
सदस्य आईडी: 1061

श्री विनोद कुमार राय
सदस्य आईडी: 1068

श्री सूबेदार शुक्ल
सदस्य आईडी: 1055

श्री राम शरण कूलवाल
सदस्य आईडी: 1062

श्री आनन्द प्रकाश मिश्रा
सदस्य आईडी: 1069

श्री रघुवंशमणि तिवारी
सदस्य आईडी: 1056

श्री पतिराम कश्यप
सदस्य आईडी: 1063

श्रीमती कुसुम पाण्डेय
सदस्य आईडी: 1070

श्रीमती अनुपमा थापर
सदस्य आईडी: 1057

श्रीमती उत्तरा कश्यप
सदस्य आईडी: 1064

श्री त्रिलोकी नाथ शर्मा
सदस्य आईडी: 1071

यात्रा एवं कथा में उत्कृष्ट सहयोग के लिए सम्मानित सदस्य गण

Balance Sheet, Prabhu Sewa Parivar for the Year Ended 31 Mar 2024

Acknowledgement Number:433409101090924 **Date of filing : 09-Sep-2024**

INDIAN INCOME TAX RETURN ACKNOWLEDGEMENT

[Where the data of the Return of Income in Form ITR-1(SAHAJ), ITR-2, ITR-3, ITR-4(SUGAM), ITR-5, ITR-6, ITR-7 filed and verified]
(Please see Rule 12 of the Income-tax Rules, 1962)

Assessment Year 2024-25

PAN	AAETP8071E		
Name	PRABHU SEWA PARIVAR		
Address	Plot No-30 , Varun Enclave , Greater Noida , 31-Uttar Pradesh , 201310		
Status	05-AOP/BOI	Form Number	ITR-7
Filed u/s	139(1)-On or before due date	e-Filing Acknowledgement Number	433409101090924

Taxable Income and Tax Details	Current Year business loss, if any	1	0
	Total Income	2	0
	Book Profit under MAT, where applicable	3	0
	Adjusted Total Income under AMT, where applicable	4	0
	Net tax payable	5	0
	Interest and Fee Payable	6	0
	Total tax, interest and Fee payable	7	0
	Taxes Paid	8	0
	(+) Tax Payable /(-) Refundable (7-8)	9	0
Accreted Income and Tax Detail	Accreted Income as per section 115TD	10	0
	Additional Tax payable u/s 115TD	11	0
	Interest payable u/s 115TE	12	0
	Additional Tax and interest payable	13	0
	Tax and interest paid	14	0
	(+) Tax Payable /(-) Refundable (13-14)	15	0

Income Tax Return electronically transmitted on 09-Sep-2024 15:10:59 from IP address 49.47.71.46 and verified by Satish Srivastava having PAN AGSPS4382D on 09-Sep-2024 using paper ITR-Verification Form/Electronic Verification Code ________ generated through ________ mode

System Generated Barcode/QR Code

AAETP8071E074334091010909244465f12e4d35021ee6e5c03099b2f9e4fa2f88e2

DO NOT SEND THIS ACKNOWLEDGEMENT TO CPC, BENGALURU

PRABHU SEWA PARIVAR
GREATER NOIDA

Income & Expenditure Account
for the year ended on 31st March 2024

Amount in Rs.

Expenditure	Note No	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023	Income	Note No	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
				Interest received on Fixed Deposits		-	-
Bank Charges		166.00	371.00	Donation received	2	1,367,062.00	1,463,092.00
Office Expenses		11,128.00	9,051.00	Interest received	4	6,703.00	4,867.00
Printing & Stationery		-	4,220.00				
Accounting Charges		12,000.00	13,000.00				
Religious trips & Katha Expenses	5	1,060,500.00	1,230,000.00				
Bhandara Expenses		62,000.00	170,500.00				
Broadcasting Exp.		189,000.00	-				
Telephone Expenses		3,588.00	3,800.00				
Excess of Income Over Expenditure		35,383.00	37,017.00				
Grand Total		1,373,765.00	1,467,959.00	Grand Total		1,373,765.00	1,467,959.00

KUMAR ABHAY & CO
Abhay
ABHAY KUMAR Proprietor
Membership Number: 541717
KUMAR ABHAY & CO.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 025759C
UDIN: 24541717BKCTIJ3112
Place: Greater Noida
Date: 01/09/2024

For and On Behalf of PRABHU SEWA PARIVAR
President
SATISH SRIVASTAVA
(President)

PRABHU SEWA PARIVAR
GREATER NOIDA

Statement of Receipts & Payments
for the year ended on 31.03.2024

Amount in Rs.

Receipts	Note No	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023	Payments	Note No	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Opening Balances as on 01.04.23							
Cash in Hand		149,351.00	14,922.00	Bank Charges		166.00	371.00
Bank		197,576.28	120,788.00	Office Expenses		11,128.00	9,051.00
				Accouting Charges		12,000.00	13,000.00
				Religious trips & Katha Expenses	5	1,060,500.00	1,230,000.00
				Bhandara Expenses		62,000.00	170,500.00
Corpus Fund	1	100,000.00	174,200.00	Broadcasating Expenses		189,000.00	-
Donation Received	2	1,367,062.00	1,463,092.00	Telephone Expenses		3,588.00	3,800.00
				Printing & Stattionery		-	4,220.00
Indirect Income	4	6,703.00	4,867.00				
				Closing Balances as on 31.03.2023			
				Cash in Hand	3	171,635.00	149,351.00
				Bank	3	310,675.28	197,576.28
Grand Total		1,820,692.28	1,777,869.00	Grand Total		1,820,692.28	1,777,869.28

KUMAR ABHAY & CO
Abhay
ABHAY KUMAR Proprietor
Membership Number: 541717
KUMAR ABHAY & CO.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 025759C
UDIN: 24541717BKCTIJ3112
Place: Greater Noida
Date: 01/09/2024

For and On Behalf of PRABHU SEWA PARIVAR
President
SATISH SRIVASTAVA
(President)

PRABHU SEWA PARIVAR
GREATER NOIDA

Balance Sheet
for the year ended on 31st March 2024

Amount in Rs.

Liabilities	Note No	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023	Assets	Note No	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Trust Fund & Corpus	1	399,300	299,300	Current Assets			
				Cash in Hand	3	171,635	149,351
Income & Expenditure Account				Bank A/c	3	310,675	197,576
Excess of Income over Expenditure	6	83,010	47,627				
Total		482,310	346,927	Total		482,310	346,927

KUMAR ABHAY & CO
Abhay
ABHAY KUMAR Proprietor
Membership Number: 541717
KUMAR ABHAY & CO.
Chartered Accountants
Firm Registration Number: 025759C
UDIN: 24541717BKCTIJ3112
Place: Greater Noida
Date: 01/09/2024

For and On Behalf of PRABHU SEWA PARIVAR
President
SATISH SRIVASTAVA
(President)

Note-1

Corpus Fund (net of Reserve & Surplus)	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Abhishek Srivastava	75,300.00	1,100.00
Anju Srivastava	112,000.00	62,000.00
Satish Srivastava	112,000.00	62,000.00
Opening P/L	-	-
Introduced during the year		
Abhishek Srivastava	25,000.00	74,200.00
Anju Srivastava	25,000.00	50,000.00
Satish Srivastava	50,000.00	50,000.00
Grand Total	399,300.00	299,300.00

Note-2

Funds Received/Donation	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Donation Recevied	618,857.00	119,988.00
Membership Fees	4,200.00	35,300.00
Dakshin Bharat Yatra	-	1,124,204.00
Char Dham Yatra	-	179,400.00
Ayodhya Katha	68,801.00	4,200.00
Badrinath Katha	137,000.00	-
Jagannath Puri	538,204.00	-
Grand Total	1,367,062.00	1,463,092.00

Note-3

Cash & Bank Balances	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Cash in Hand	171,635.00	149,351.00
Canara Bank	310,675.28	197,576.28
Grand Total	482,310.28	346,927.28

Note-4

Indirect Income	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Bank Interest	6,703.00	4,867.00
Grand Total	6,703.00	4,867.00

Note-5

Religious trips & Katha Expenses	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Char Dham Yatra	-	100,000.00
Dakshin Bharat Yatra	-	1,000,000.00
Subharti Media Ltd	-	130,000.00
Ayodhya Katha	275,000.00	-
Badrinath Katha	225,000.00	-
Jagannath Puri	560,500.00	-
Grand Total	1,060,500.00	1,230,000.00

Note-6

Excess of Income over Expenditure	As on 31.03.2024	As on 31.03.2023
Opening Balance	47,627.00	10,610.00
Current Year	35,383.00	37,017.00
Grand Total	83,010.00	47,627.00

प्रभु सेवा परिवार में वित्तीय वर्ष 2023–24 दान दाताओं के नाम

श्री उमेश मुरारी लाल चामरिया
मुम्बई

151000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime — Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE		AAETP8071E04241000003
Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071EF20216
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	02-Nov-2021
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	AAAPC4653K
	(7) Name of Donor	Umesh Murarilal Chamaria
	(8) Address of Donor	Mumbai
	(9) Amount of donation Received	₹ 151,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2023-24
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 195299490010524 (10BD ARN) on 01 May 2024

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as **President** and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number **AGSPS4382D**

साहस इण्टरनेशनल प्रा0 लि0
(श्री आशुतोष श्रीवास्तव)
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

श्रं SAAHAS

100000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime — Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE		AAETP8071E04241000002
Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071EF20216
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	02-Nov-2021
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	ABHCS8396L
	(7) Name of Donor	Saahas International Private Limited
	(8) Address of Donor	Greater Noida
	(9) Amount of donation Received	₹ 100,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2023-24
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 195299490010524 (10BD ARN) on 01 May 2024

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as **President** and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number **AGSPS4382D**

साहस इण्टरनेशनल प्रा0 लि0
(श्री आशुतोष श्रीवास्तव)
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

श्रं SAAHAS

100000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime — Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE		AAETP8071E04241000001
Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071EF20216
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	02-Nov-2021
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	ABHCS8396L
	(7) Name of Donor	Saahas International Private Limited
	(8) Address of Donor	Greater Noida
	(9) Amount of donation Received	₹ 100,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2023-24
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 195299490010524 (10BD ARN) on 01 May 2024

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as **President** and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number **AGSPS4382D**

श्री कुमार हर्ष वर्धन
ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)

150000/–

FORM NO. 10BE
[See rule 18AB]
Certificate of donation under clause (ix) of sub-section (5) of section 80G and under clause (ii) to sub-section (1A) of section 35 of the Income-tax Act, 1961

e-Filing Anywhere Anytime — Income Tax Department, Government of India

ARN of form 10BE		AAETP8071E04241000004
Donee	(1) PAN of the the reporting person	AAETP8071E
	(2) Name of the reporting person	PRABHU SEWA PARIVAR
	(3) Address of the reporting person	30 VARUN ENCLAVE,GREATER NOIDA,Knowledge Park-I,Knowledge Park-I S.O,GAUTAM BUDDHA NAGAR,Uttar Pradesh,INDIA-201310
	(4) Unique Registration Number	AAETP8071EF20216
	(5) Date of issue of Unique Registration Number	02-Nov-2021
Donor and donations	(6) Unique Identification Number	
	(a) ID Code	Permanent Account Number
	(b) Unique Identification Number	AESPV2123H
	(7) Name of Donor	Kumar Harsh Vardhan
	(8) Address of Donor	Greater Noida
	(9) Amount of donation Received	₹ 150,000
	(10)Financial year in which such donation was received	2023-24
	(11)Type of donation	Others
	(12)Section under which donation is eligible for deduction	Section 80G

This 10BE Certificate has been generated through Form 10BD filed by PRABHU SEWA PARIVAR vide 195299490010524 (10BD ARN) on 01 May 2024

Verification

I ,SATISH SRIVASTAVA Son of JAWAHAR LAL SRIVASTAVA solemnly declare that to the best of my knowledge and belief, the information given in the certificate is correct and complete and is in accordance with the provisions of the Income-tax Act, 1961. I further declare that I am making this certificate in my capacity as **President** and I am also competent to issue this certificate. I am holding permanent account number **AGSPS4382D**

प्रभु सेवा परिवार स्मारिका 2024 प्रकाशन में सहयोगियों के नाम

	नाम	स्थान	सहयोग राशि
	श्री आशुतोष श्रीवास्तव साहस इन्टरनेशनल प्रा. लि.	ग्रेटर नोएडा	11000/–
	श्री निवास पाण्डेय	गाजियाबाद	2100/–
	श्री प्रेम प्रकाश शर्मा	हापुड़	2100/–
	श्री ओमप्रकाश पाण्डेय	लखनऊ	2100/–
	श्री अरूण कुमार शुक्ला	बाँदा	2100/–
	श्री राजेन्द्र नाथ चौबे	लखनऊ	1100/–
	श्रीमति विपरा बिजयनी राउत	कुजंग, उड़ीसा	500/–

प्रभु सेवा परिवार श्री अभिषेक श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी को उनकी उच्चतम सेवाओं के लिए विशेष आभार प्रकट करता है। अभिषेक श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी हमारे प्रभु सेवा परिवार के लेखा–जोखा का प्रबंधन दक्षतापूर्वक कर रहे है। आशा करते है कि भविष्य में अपनी सेवायें देते रहेंगे।

प्रभु सेवा परिवार अभिषेक श्रीवास्तव एण्ड कम्पनी की सफलता की कामना करता है।

M/s Abhishek Srivastava & Co.
Chartered Accountants
www.asc-ca.com

विशेष निवेदन

प्रभु सेवा परिवार के इस स्मारिका के प्रकाशन का यह तृतीय अंक है। यह स्मारिका प्रभु सेवा परिवार के उद्धेश्यों की प्राप्ती में एक अहम् भूमिका निभाएगी। यह हमारे बीच सूचना संचारण, परिवार के विशेष गतिविधियों एवं क्रियाकलापों, उपलब्धियों आदि की जानकारी आप तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य करेगी। इसके प्रकाशन एवं सफलता के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस स्मारिका के अगले अंक के प्रकाशन के लिए सहयोग राशि, अपने व्यवसाय से संबन्धित विज्ञापन, लेख, कविताएं आदि देने के लिए संपर्क करें:–

सतीश श्रीवास्तवः Mob.: 8808836666, Email: prabhusewaparivar@gmail.com

प्रभु सेवा परिवार

PSP

Regn. No. 1537/2021

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ।।

श्रं SAAHAS

Saahas International Pvt. Ltd.